SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:56, Issue: 08
January - 2026, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

जनवरी-2026
रु.20/-

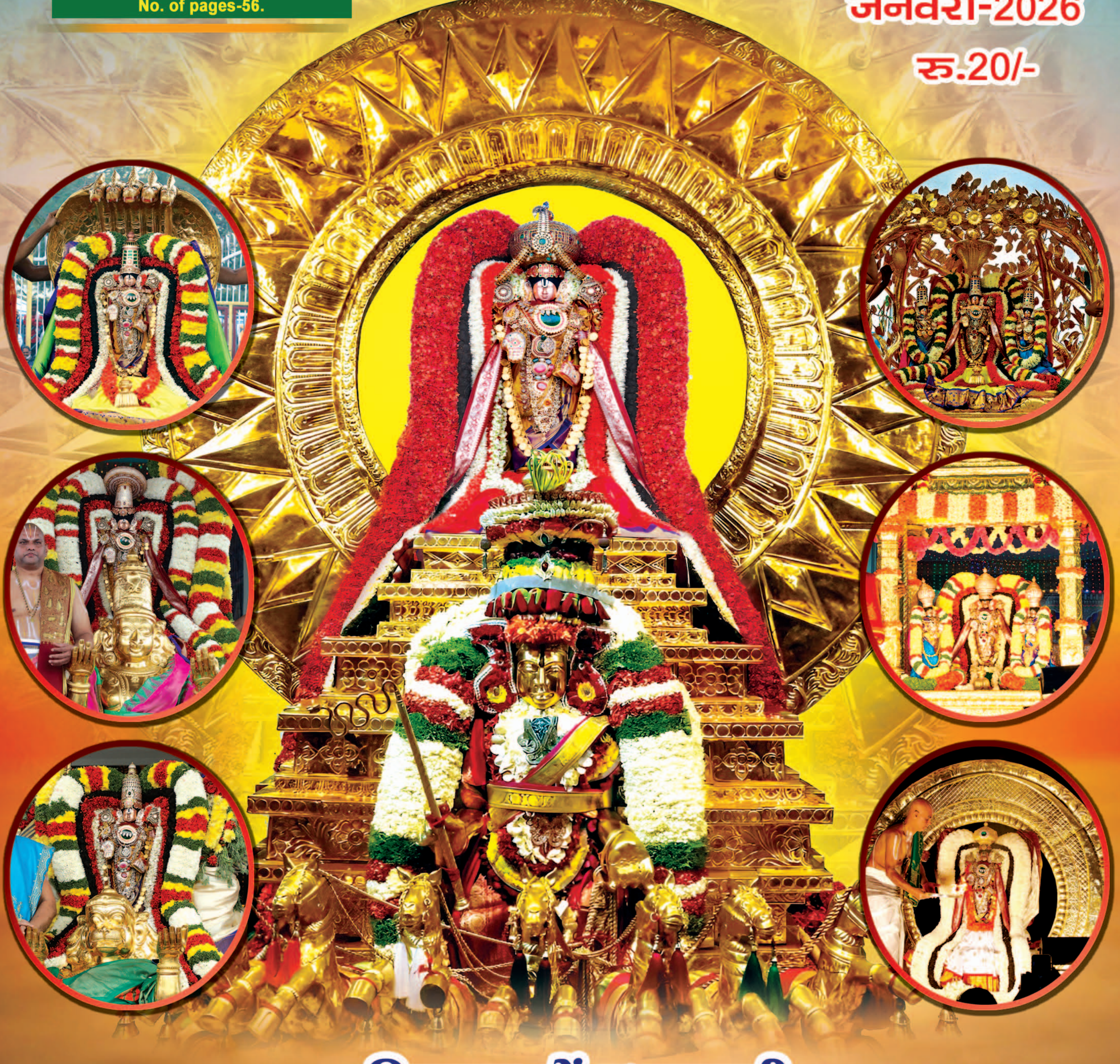

तिरुमल में रथसप्तमी

25-01-2026

श्री बालाजी मंदिर का अर्जित सेवाएँ, तिरुमल

क्रम सं.	सेवा का नाम	सेवा का समय	टिकट का दाम रु.	व्यक्तियों का प्रवेश
	दैनिक सेवाएँ			
1	सुप्रभात	प्रातः 3.00 बजे	120/-	1
2	तोमाल सेवा (मंगल, बुध, गुरु)	प्रातः 3.30 बजे	220/-	1
3	अर्चना (मंगल, बुध, गुरु)	प्रातः 4.30 बजे	220/-	1
	दैनिक उत्सव			
4	कल्याणोत्सव	दोपहर 12.00 बजे	1,000/-	2
5	डोलोत्सव (ऊँजल सेवा)	दोपहर 2.00 बजे	500/-	1
6	अर्जित ब्रह्मोत्सव	दोपहर 3.00 बजे	500/-	1
7	सहस्रदीपालंकार सेवा	सायं 5.00 बजे	500/-	1
	साप्ताहिक सेवाएँ			
8	अष्टदल पाद पद्माराधना सेवा (मंगलवार)	सुबह 9.30 बजे	1,250/-	1
9	तिरुप्पावडा सेवा (गुरुवार)	सुबह 7.00 बजे	850/-	1
10	अभिषेक (शुक्रवार)	प्रातः 4.30 बजे	750/-	1
	वार्षिक / सामयिक सेवाएँ			
11	प्लवोत्सव (फरवरी/मार्च)	रात 7.00 बजे	500/-	1
12	वसंतोत्सव (मार्च/अप्रैल)	दोपहर 2.00 बजे	300/-	1
13	ज्येष्ठाभिषेक (अभिदेयक अभिषेक) (जून)	सुबह 9.00 बजे	400/-	1
14	पवित्रोत्सव (अगस्त)	सुबह 9.00 बजे	2,500/-	1
15	पुष्पयाग (अक्तूबर/नवंबर)	सुबह 9.00 बजे	700/-	1

टोल फ्री नंबर - 155257

वाट्स एप फीड ब्याक नंबर - 9399399399

ई-मेइल-आई.डी. - helpdesk@tirumala.org

उपर्युक्त सूचित सेवा टिकट ऑनलाइन में मात्र ही बुकिंग करना पडता है।

अन्य विवरण के लिए ति.ति.दे. वेबसाइट ttdevasthanams.ap.gov.in से संपर्क करें।

सूचना - उपर्युक्त समाचार में परिवर्तन होने की संभावना है।

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-३४)

सब लोग तेरी बहुत काल तक रहनेवाली अपकीर्ति का कथन करेंगे। माननीय पुरुष के लिए अपकीर्ति मरण से भी बढ कर है।

नमो नमो दानव विनाश चक्रमा
समर विजयमैन सर्वेशु चक्रमा ॥ नमो ॥

अट्टे पदारु भुजाल नमरिन चक्रमा
पट्टिन आयुधम्मुल बलु चक्रमा
नेट्टन सूडुकन्नुल निलिचिन चक्रमा
रट्टगा मन्निंचवे मेरयुचु चक्रमा ॥ नमो ॥

अरयनारु कोणाल नमरिन चक्रमा
धारलु वेयिटितोडी तगु चक्रमा
आरक मीदिकि वेल्ले अग्नि शिखल चक्रमा
गारवान नी दासुल गाववे चक्रमा ॥ नमो ॥

रविचंद्रकोटि तेज राशियैन चक्रमा
दिविज सेवितमैन दिव्य चक्रमा
तविलि श्रीवेंकटेशु दक्षिणकर चक्रमा
इवल नी दासुलमु येलुकोवे चक्रमा ॥ नमो ॥

श्री महाविष्णु के सुदर्शन चक्र को साक्षात् श्री वेंकटेश्वर का ही रूप मानकर उसका अभिवादन किया गया है।

सुदर्शन चक्र को संबोधित करते हुए वे कहते हैं - षष्टादश भुजाओं में विविध आयुओं से अलंकृत हे सुदर्शन चक्र! तीन आँखों, षट्कोणों, सहस्र छोरों से, अग्नि को बरसाते हुए, राक्षसों का संहार तुम करते हो। कोटि सूर्य और चंद्रकांति से सुशोभित तुम्हारी सेवा कर रहे हैं - सारे देवी-देवतायें। श्री वेंकटेश्वर के दक्षिण कर-कमल को अलंकृत सदा तुम करते रहते हो। अब अपने इन दासों की रक्षा करो।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुपति

श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2026 फरवरी 07 से 17 तक

07-02-2026 शनिवार
रात - मूषिकवाहन पर गणपति, अंकुरार्पण

08-02-2026 रविवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

09-02-2026 सोमवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

10-02-2026 मंगलवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

11-02-2026 बुधवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

12-02-2026 गुरुवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव
रात - अधिकारनंदिवाहन

13-02-2026 शुक्रवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

14-02-2026 शनिवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - अश्ववाहन

15-02-2026 रविवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन
(महाशिवरात्रि)

16-02-2026 सोमवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव कल्याणोत्सव

17-02-2026 मंगलवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन पर नटराजस्वामी, त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण, रावणासुरवाहन

श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2026 फरवरी 07 से 16 तक

07-02-2026 शनिवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

08-02-2026 रविवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

09-02-2026 सोमवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

10-02-2026 मंगलवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

11-02-2026 बुधवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

12-02-2026 गुरुवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुड़वाहन

13-02-2026 शुक्रवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

14-02-2026 शनिवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

15-02-2026 रविवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

16-02-2026 सोमवार
दिन - पालकी उत्सव, तिरुच्चि उत्सव, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-56 जनवरी-2026 अंक-08

विषयसूची

मकर संक्रांति	श्री के.रामनाथन	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	10
माघ मास का महत्व	श्री अवधेश कुमार शर्मा	14
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	17
वसंतपंचमी	श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया	20
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	23
रथसप्तमी	श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया	31
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	34
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	37
कर्नाटक संगीत के पितामह पुरंदर दास	डॉ.टी.लतामंगेश	38
श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली	प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	40
पुदीना और इसके स्वास्थ्य लाभ	डॉ.सुमा जोषि	43
जनवरी महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
चित्रकथा - अंतिम उपदेश	श्री के.रामनाथन	48
नीतिकथा - बुद्धिमान सेवक	श्रीमती प्रेमा रामनाथन	49
चित्रकथा - प्रकृति का सम्मान करें	श्री के.रामनाथन	51
क्विज - 42		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - सप्तवाहनों पर श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री मलयप्पस्वामी, तिरुमल।

गौरव संपादक
श्री अनिल कुमार सिंघाल, I.A.S.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रकाशक - संपादक,
प्रधान संपादक (F.A.C.)
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम, M.A., Ph.D., P.G. Dip. in JMC

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा, M.A., B.Ed.

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, B.A., B.Ed.
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
मुद्रणालय & पुस्तक बिक्री केंद्र,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 4359, Chief Editor - 2264363.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

संपादकीय

सूर्य का राशि संक्रमण

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी।। (भगवद्गीता 10-21)

नारायण स्वरूप सूर्य भगवान आरंभ से ही आकाश में ही प्रकाशित होकर इस दुनिया को प्रकाश व अष्ण को प्रसारित कर रहे हैं। सूर्य भगवान को कुछ हजार सालों से पहले से ही पूजा आराधना किया जा रहा है। यह एक महत्वपूर्ण विषय है।

श्रीमद्‌विराट् स्वरूप श्रीमन्नारायण का नेत्र ही सूर्य है। ऐसा विराट्स्वरूप सूर्य भगवान हर एक महीने एक एक राशि में प्रवेश करते है। इस राशि प्रवेश को ही 'संक्रमण' या 'संक्रांति' कहते हैं। ऐसा वर्ष में 'बारह संक्रांति' आते है। इसमें मुख्यतः संक्रांति - मेष संक्रमण, कर्काटक संक्रमण, तुला संक्रमण, मकर संक्रमण। धनुस्संक्रमण से लेकर मकर संक्रमण तक हुए तीस दिनों को धनुर्मास व्रत के रूप में आयोजित करते हैं। श्रीवैष्णव संप्रदाय में यह व्रत विशिष्ट स्थान को पाई है। सूर्य गमन के आधार पर आयोजित होनेवाला पर्व के कारण इस त्यौहार को 'संक्रांति' कहते हैं। और इसी समय में सूर्य भगवान को विशेष पूजा-आराधन संपन्न करते हैं।

कर्म साक्षी कारक सूर्य स्वयंभुव है। ग्रहों का अधिपति है। सहस्र किरण तेज पुंज है। सात अश्वों के साथ, स्वर्ण रथ पर याण करते है। इसलिए सूर्य सप्त संख्या का सूचक बनता है। ऐसा सूर्य भगवान मकर राशि में प्रवेश करते समय ही 'संक्रांति' कहते है। मनुष्य का जीवन याण में अत्यंत प्राधान्य लब्ध कर सभी को पसंदीदा पर्व ही संक्रांति त्यौहार है। इस मकर संक्रांति को स्वर्ण संक्रांति भी कहते हैं।

रथसप्तमी पर्व के अवसर पर तिरुमल में अत्यंत वैभव से अर्थ ब्रह्मोत्सव के नाम पर एकी दिन सात वाहनों पर आरूढ़ होकर भगवानजी माड़ावीथियों में जुलूस निकाल कर भक्तों को दर्शन देते हैं। आशीश को प्रधान करते हैं। प्रप्रथम सूर्यप्रभावाहन, लघुशेषवाहन, गरुड़वाहन, हनुमंतवाहनों में जुलूस निकालने के बाद दोपहर श्री स्वामीपुष्करिणी में चक्रस्नान को आयोजित करते हैं। तदनंतर कल्पवृक्षवाहन, सर्वभूपालवाहन और चंद्रप्रभावाहनों पर आसीन होकर भक्तों को आशीश प्रधान करते हैं। इन सप्तवाहनों पर भगवानजी को एकी दिन दर्शन करके पुनीत बन जाइए और साथ-साथ इसी महीने में तिरुमल अध्ययनोत्सव समाप्त होती हैं। आंडाल नीराट्टोत्सव, वसंत पंचमी, भीष्म एकादशी, देवुनि कड़पा-श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव भी संपन्न करते हैं। इन सारे पर्व व उत्सव को अत्यंव वैभव से आयोजित करते हैं। आइए भगवानजी का दर्शन करें! पुनीत बनें!

आध्यात्मिकता की जड़

इस विशाल संसार में भारत भक्ति और संस्कृति की जड़ है। इसलिए, यहाँ हर साल विभिन्न आध्यात्मिक त्योहार मनाए जाते हैं। नवग्रहों में प्रधान माने जाते सूर्यदेव की विशेष उपासना का पर्व ही संक्रांति है। ऋग्वेद सूर्य को अग्नि का अग्रज, यजुर्वेद पूरी दुनिया का रक्षक, सामवेद दुनिया को रोशन करने वाला और शतपथ ब्राह्मण सूर्य को सोने की किरणों से बना प्रकाश पुंज चक्र बताता है।

ऊर्जा का स्वरूप

चूंकि सूर्य समय पर उदय और अस्त होता रहता है, और बिना किसी रुकावट के सभी जीवित प्राणियों की रक्षा करता है, इसलिए यह महान ऊर्जा का स्वरूप माना जाता है। मकर संक्रांति सूर्य के प्रत्यक्ष चक्र पर आधारित त्योहारों में सबसे प्रमुख है। 'संक्रांति' शब्द संस्कृत के 'सम्'+ 'क्रांति' के मेल से बना है। 'सम्' का अर्थ है सुंदरता और 'क्रांति' का अर्थ है परिवर्तन या प्रवेश। इस दिन, सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है, जो एक पवित्र परिवर्तन है।

पूजा की प्राचीनता

संक्रांति त्योहार का आधार सूर्य की पूजा करना है। सूर्य इस ब्रह्मांड में प्राणियों के लिए आधार, प्रकाश और ऊर्जा का स्रोत है। सूर्य की पूजा प्राचीन काल से होती आ रही है। इसके कई संदर्भ, पुराने महाकाव्यों और साहित्य में मिलते है।

मकर संक्रांति

- श्री के.रामनाथन

यात्रा का समय

सूर्य पौष के पहले दिन उत्तर की ओर अपनी यात्रा शुरू करता है। उत्तरायण नामक यह काल छह महीने तक चलता है, यानी पौष के पहले दिन से लेकर ज्येष्ठ के अंत तक। इसी तरह, दक्षिण की ओर गति, जिसे दक्षिणायन कहा जाता है, आषाढ़ महीने से शुरू होकर मार्गशीर्ष महीने तक चलती है।

फलदायी उपासना

वैदिक ग्रंथों के अनुसार, उत्तरायण काल न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि देवताओं के लिए भी एक पवित्र समय है। यह काल देवताओं के दिन का समय माना जाता है। लेकिन दक्षिणायन काल देवताओं के रात का काल माना जाता है। विश्वास किया जाता है कि संक्रांति के दिन, जो उत्तरायण की शुरुआत है, किए गए अनुष्ठान, दान-पुण्य और पवित्र नदियों में स्नान कई गुना अधिक शुभ फल देते हैं। इसलिए, मकर संक्रांति का यह दिन दक्षिणायन काल की समाप्ति और उत्तरायण काल के आरंभ का प्रतीक है। उत्तरायण काल को उस समय की शुरुआत माना जाता है जब दुनिया में प्राप्त होने वाला प्रकाश और गर्मी बढ़ने लगती है।

गीता की व्याख्या

भगवद्गीता के आठवें अध्याय का 24वाँ श्लोक में,

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।

तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः।।

इसका अर्थ यह है कि जो लोग इस समय, यानी उज्ज्वल अग्नि के अधिदेवता, दिन, शुक्ल पक्ष और सूर्य के उत्तर दिशा में यात्रा करने के समय अपना शरीर त्यागते हैं, वे ब्रह्म को प्राप्त करते हैं।

भीष्म पितामह और संक्रांति

मकर संक्रांति और महाभारत युद्ध के बीच एक संबंध है। कुरुक्षेत्र युद्ध के अंत में, कौरव सेना के सेनापति, भीष्म पितामह, अर्जुन के तीरों से घायल होकर बाणों की शय्या पर लेटे थे। उन्हें अपनी इच्छा से मृत्यु प्राप्त करने का वरदान प्राप्त था। इसलिए, उन्होंने मोक्ष प्राप्ति के पवित्र दिन,

उत्तरायण की शुरुआत, यानी संक्रांति तक अपना प्राण नहीं त्यागा। बाद में, उन्होंने मकर संक्रांति के दिन मोक्ष प्राप्त किया। इसलिए, यह माना जाता है कि जो लोग मकर संक्रांति के दिन मरते हैं, उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कृतज्ञता का त्योहार

आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण यह दिन न केवल दान-पुण्य करने का दिन है, बल्कि इसे फसल के त्योहार के रूप में भी मनाया जाता है। भारत के विभिन्न हिस्सों में यह दिन फसल की कटाई के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस दिन, किसान अपनी फसल की कटाई पूरी होने पर प्रकृति की समृद्धि के लिए आभार व्यक्त करते हैं। इसलिए, संक्रांति का त्योहार केवल फसल की कटाई का त्योहार मात्र नहीं है, बल्कि यह वह दिन है जो भारतीय संस्कृति में सूर्य के अटूट संबंध को स्थापित करता है।

पूरे भारत में उत्सव

हर साल 14 जनवरी को मनाया जाने वाला मकर संक्रांति का त्योहार अच्छी फसल प्राप्त करने में मदद करने के लिए सूर्य को धन्यवाद देने के रूप में पूरे भारत में मनाया जाता है। इस त्योहार को तमिलनाडु में पोंगल, गुजरात में उत्तरायण, पंजाब में लोहड़ी, बंगाल में पौष संक्रांति, कर्नाटक में सुग्गी हब्बा, ओडिशा में मकर चौला, महाराष्ट्र और हरियाणा में माघी संक्रांत, असम में भोगली बिहू, कश्मीर में शिशिर सेंगक्राथ, उत्तर प्रदेश और बिहार में खिचड़ी पर्व जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है और धूमधाम से यह पर्व मनाया जाता है। सूर्य को धन्यवाद देने के लिए आयोजित यह मकर संक्रांति त्योहार दुनिया को उस स्थिति का एहसास कराता है जिसमें प्रकृति और मनुष्य एक साथ जुड़े हुए हैं।

अंग्रेजी नूतन वर्ष-2026 और मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएँ

- प्रधान संपादक

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

पंचमाश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

ब्रह्म, इंद्र आदि के सपरिवार विवाह के लिए पधारना:

कहकर इस रूप में नारायण के द्वारा भेजने पर गरुड़ शिव को बुलाने गया। फिर गरुड़ हवा में उड कर ब्रह्म के पास पहुँच गया। ब्रह्म को पत्रिका को दे दिया। तब ब्रह्म ने वहीं से सारे मुनिगणों को सुनने के लिए संतोष के साथ इस रूप में कहा। ''श्रीरस्तु! ब्रह्म के आशीर्वाद से पृथ्वी पर हमारे लिए शुभ है और आप के कुशल मंगल के बारे में लिख भेजिए। तदुपरांत सुरचिर वैशाख शुद्ध दशमी शुक्रवार के दिन की शुभ मुहूर्त में कलियुग में हरि आकाश राज की पुत्री का पाणीग्रहण करेंगे। परिवार समेत जो आ सकते हैं उन्हें साथ लेकर शीघ्र ही पहुँचकर विवाह को संपन्न कीजिए। ऐसा हरि के द्वारा लिखे गए पत्र को आश्चर्य के साथ ब्रह्म ने पढा। तब ब्रह्म ने श्रीनिवास स्वामी के विवाह महोत्सव में सपरिवार समेत पधारने के लिए दिक्पाल प्रमुखों को शुभ पत्र लिखवाकर भेजा। स्वयं सकल दिव्याभरणों से अलंकृत होकर सावित्री, गायत्री, सरस्वती समेत हंसवाहन पर आरूढ़ होकर, चतुर्वेद पारायण करनेवाले महर्षियों को साथ में लेकर मंगल वाद्यों के बजते गरुड़ के साथ वेंकटाद्री पहुँच गए। तब श्रीनिवास वाद्यरव को सुन कर उठकर ब्रह्म की अगवानी करने गए। तब ब्रह्म ने अपने हंसवाहन से उतर कर हरि को नमस्कार किया। हरि तब अपने पुत्र की तरफ देखकर भाव विह्वल होकर गद्गद कंठ से कुछ बोले बिना आलिंगन करके उन्हें ले आये। तिंत्रिणी वृक्ष के नीचे पहले से बने सिंहासन पर उन्हें बिठाया। तब हरि ने भृगु के हृदय पर लात मारने से लेकर, लक्ष्मी के वैकुंठ छोड कर कोल्हापुर जाने से लेकर, अपने लिए हुए कष्टों के बारे में, पद्मावती से विवाह करने के लिए बने हेतु क्रम से ब्रह्म को बताया।

उसी समय शेष ने कैलास जाकर चंद्र शेखर को शुभ पत्र दिया। ब्रह्म को जिस रूप में लिखा गया था वह भी उसी प्रकार का पत्र था। गिरिजा, प्रमदगणों के सुनते शिव ने उस पत्र को पढ कर सब को सुनाया। तुरंत उठकर पार्वती से मिल कर दिव्याभरण और दिव्य वस्त्रों को पहन कर वृषभवाहन पर आरूढ़ होकर विविध वाद्यों के बजते शेष के साथ प्रमदगणों का

कीर्तन करते शिव शेषाद्री पहुँच गए। तब शिव के आगमन को देखकर मोद से वासुदेव ने वहाँ रहनेवाले ब्रह्म के साथ मिल कर शिव की अगवानी करने गए। शिव भगवान ने नंदीवाहन से उतर कर चक्री को नमस्कार किया। नारायण ने शिव का आलिंगन करके ले आकर मणि के पीढे पर बिठाया। अपने पूर्व वृत्तांत को शिव को सुनाने लगे थे। तब अपने अपने परिवार समेत निज वाहनों पर आरूढ़ होकर इंद्रादि देवतागण शेषाद्री पहुँच गए। उन्होंने हरि, हर, ब्रह्म को प्रणाम किया। उन्होंने उन को आशीर्वाद दिया। तब श्रीनिवास ने शेष और गरुड़ को बुलाकर उनके द्वारा इंद्रादि देवतागणों को उचित आसन दिलाया। कुशल मंगल पूछ कर तदुपरांत सब को देखकर इस रूप में कहा।

“हे इंद्रादि देवतागण! मैं इस कलियुग में आकाश राज की पुत्री के साथ पाणीग्रहण करना चाहता हूँ। यह आप सब को स्वीकार है न?” इस रूप में पूछने पर वे सब हरि की तरफ देखकर अत्यंत संतोष के साथ “हे श्रीकांत! यह कार्य हमारे लिए परम संतोष का कार्य है।” तदुपरांत देवाधिपति को देखकर हरि ने “हे इंद्र! विश्वकर्म के साथ नारायणपुर पहुँच कर एक बहुत बडा भवन का निर्माण कराओ। जाओ!” कहने से इंद्र तुरंत शेषाद्री से उतर कर नारायणपुर पहुँच गया। उस नगर के समीप में विश्वकर्म के द्वारा मरकत मणि तोरणों के साथ एक सोने के मंदिर का निर्माण करवाया। फिर तुरंत वेंकटाद्री पहुँचकर श्रीनिवास के द्वारा बुलाये जानेवाले सब को बुलाने के लिए षण्मुख को, आवश्यक तैयारियाँ करने के लिए मन्मथ को, स्वयं पाक करने के लिए पावक को, जलाकर्षण करने के लिए वरुण देव को, गंध, कस्तूरी आदि सुगंध द्रव्यों को लाने के लिए गंधमादन को, धन दान करने केलिए कुबेर को, दीप प्रकाश करने के लिए चंद्र को, आवश्यक पात्रों को देने के लिए वसुवों को, सारे कार्यों को अच्छी तरह करने की निगरानी रखने के लिए दंडधर को नियुक्त किया। तब वशिष्ट ने वराहस्वामी की सन्निधि में यजुश्शाकोक्त क्रम से गृह यज्ञ करवाया। तब ब्रह्म ने विवाह पीढे का निर्माण करवाया। उस में पार्वती आदि प्रमुख सुवासिनों से चंदन का तेल, हल्दी आदि सुगंध द्रव्यों को सोने की थालियों में रखवाकर विवाह के पीढे में रखवाया। फिर हरि की ओर देखकर अभ्यांगन स्नान के बाद पुण्याहवचन, इष्टदेवता प्रार्थना, कुल देवता की प्रतिष्ठा करने की जरूरत के बारे में बताकर हरि को शीघ्र अभ्यांगन स्नान करने के लिए बुलाया। तब हरि चिंताक्रांत होकर ब्रह्म से इस रूप में कहा।

हरि सिरि के बारे में सोचकर चिंता करना :

“सुनो हे पद्मज! अब लक्ष्मी कोल्हापुर में है। उस के आने के पहले मेरा इस रूप में अभ्यांगन स्नान के लिए जाना ठीक है क्या? इस कारण से कार्य इस रूप में हुआ है। सिरि रूठ कर चली गयी। अब प्रीति से उस के आने के पहले विवाह करना मेरे लिए अच्छा नहीं है।” इस रूप में लक्ष्मी के बारे में सोचते सोचते हरि के रोदन को देखकर ब्रह्मादि भयभीत हो गए। जवाब देने में असमर्थ होकर देखते रहने से रुद्र ने इस विचित्र को देखकर कहा। “हे इंदिरेश! शुभ काल में इस रूप में चिंता करना उचित नहीं है। अगर तुम चाहते हो तो लक्ष्मी को यहाँ पर बुलाओ। उसे छोड कर अभ्यांगन

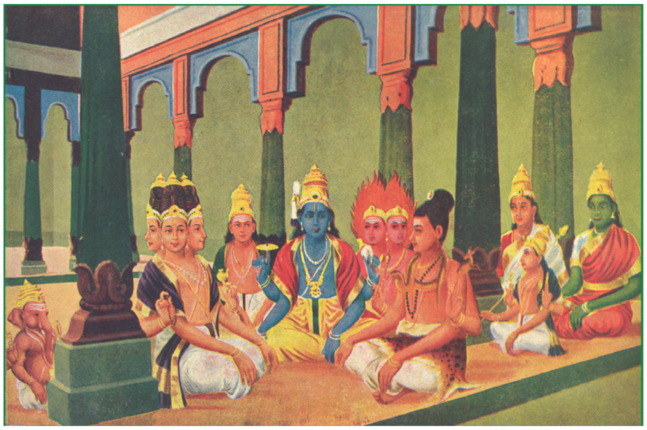

स्नान के समय इस रूप में रोदन करते तुम को कोई रोकने की शक्ति रखता है? हे हरि! मन के खेद को दबाकर इसी शुभ मुहूर्त में ही पीढे पर बैठ जाओ।'' इस रूप में रुद्र ने उसी शुभ मुहूर्त में हरि को अभ्यांगन स्नान करने के लिए सावधान किया। तब रुद्र को देखकर हरि ने कहा। ''हे शंकर! बाल भाषा में बोलना बंद करो। जिन के दुःख हैं वे ही उन के बारे में जानते हैं। दूसरों को मालूम नहीं होता है। ब्रह्म प्रलय के समय वटपत्र पर शयन करते समय भी नित्य अनुपाइनी के रूप में सदा मेरे हदय पर रहनेवाली लक्ष्मी काल गति से मुझे से अलग हुई है। इतने दिनों से मैं अकेला जी रहा हूँ। उस समय मेरे मन में कोई चिंता नहीं थी। अब मेरे मन में विवाह की इच्छा हुई तो सब आ गए। सिर्फ एक लक्ष्मी की ही कमी है। इसलिए मुझे खेद है। लक्ष्मी के आने के पहले विवाह करना ठीक नहीं है, ऐसा कोई मेरा आप्त कहेगा, इस की प्रतीक्षा मैं कर रहा था। किंतु किसी ने ऐसा नहीं कहा। इसलिए भी मुझे दुःख हो रहा है।'' हरि की इन बातों को सुनकर ब्रह्मादि को भय हुआ। सब मुकलित हस्त होकर हरि के सामने खडे होकर इस रूप में कहा। 'अगर रमा आ जायेगी तो वे विवाह होने नहीं देंगी।' ऐसा सोचकर लक्ष्मी को बुलाने की बात हम ने आप से नहीं कही। हम से अपचार हुआ है। उस सागर कन्या के न आने से विवाह नहीं करना है, ऐसा आप को लगना अच्छा ही है। हे पिता! यह हमारे लिए भी अच्छा है।''

कोल्हापुर वासिनी लक्ष्मी को सूर्य भगवान ले आना :

''लक्ष्मी को कम से कम अब तो यहाँ पर बुला लाइए। यह सब के लिए स्वीकार्य है।'' इस रूप में कहने पर हरि ने प्रसन्न होकर कहा। ''हे सरसिज मित्र सूर्य! लक्ष्मी को शीघ्र ही इस शेषाद्री पर बुला लाओ।'' हरि की इन बातों को सुन कर दिवाकर ने हरि को नमस्कार करके इस रूप में कहा। ''हे हरि! करवीर पुर (कोल्हापुर) में रहनेवाली लक्ष्मी के पास जाकर उन से क्या कहना है? उसके बारे में मुझे बताइए।'' सूर्य की इन बातों को सुन कर हरि ने हँस कर ''हे जलाप्त! सुनो। हमारी सागर कन्या को नमस्कार करके 'हरि वेंकटाद्री पर दुबक कर अशक्त हो गए

हैं। तुझे देखना चाहता है। वहाँ पधार कर हरि को दर्शन दीजिए।'' इस रूप में सच सच बताओ। यह सुनते ही वह रमा अवश्य यहाँ पर आयेगी।'' कहते हरि के भेजने पर सूर्य भगवान निकल पडे। कोल्हापुर पहुँचकर दिवाकर ने लक्ष्मी को नमस्कार करके इस रूप में कहा। ''हे सिंधु पुत्री! चक्री अब अशक्त होकर दीन बन कर शेषाद्री पर स्थित है। हे माँ! उन्होंने शीघ्र ही आप को देखने की इच्छा प्रकट की है।'' इस रूप में सूर्य भगवान के कहने पर तुरंत चिंतित होकर लक्ष्मी शीघ्र ही रथ पर आरूढ़ होकर आकाश मार्ग में प्रेम से शेषाद्री पहुँच गयी। तब सिरि अवश्य आयेगी, ऐसा विश्वास रखनेवाले ब्रह्मादि देवताओं ने अपने अपने दायित्व को पूरा करते हुए लक्ष्मी की अगवानी की है। श्री लक्ष्मी को देख कर सुरुचिर भक्ति से नमस्कार करके उन्हें बुला लाये। तब पार्वती, भारती आदि प्रमुख अंगनामणियों ने

लक्ष्मी को नमस्कार करके आदर किया। तब कपट नाटक सूत्रधारी विष्णु ने लक्ष्मी का आदर करके मुहूर्तद्वय की आशा से लक्ष्मी से आलिंगन करके प्रेम से उन्हें रत्न के पीढे पर उन्हें बिठाया। स्वयं भी बैठ कर सिरि को आनंद देनेवाली कुछ बातें रहस्य रूप में बताकर हरि ने और आगे कहा।

श्रीहरि लक्ष्मी से संभाषण करना :

''हे श्री वनितामणि! मुझ पर रूठ कर जब से तुम चली गयी तब से लेकर अब तक मैं तुम्हारा ही स्मरण करते हुए इस वल्मीक में दुबक कर ही रहा। एक ग्वाले ने यहाँ पर आकर परशु से मेरे सिर पर मारा है। तब भी मैं पीडा सहता रहा। मुझे बहुत दया के साथ वकुला ने एक माँ के रूप में मेरी रक्षा की है। कठोर परशु की मार को सिर्फ तेरे मांगल्य सूत्र की महिमा के कारण ही मैं सह पाया। जीवित रह पाया। इस में कोई मेरी महिमा नहीं है। हे वनजाक्षी! तुम्हारी पतिव्रत निष्ठा से ही मैं बच पाया हूँ। और मैं क्या कह सकता हूँ। इससे अलग आकाश राज की कन्या मुझे देखकर मोहित हुई है। इसलिए प्रेम से मैं उससे विवाह करने के लिए मन में सोचा है। तुम स्वीकार करके विवाह करने के लिए कहेगी तो मैं विवाह करूँगा। अगर तुम स्वीकार नहीं करेगी तो मैं विवाह नहीं करूँगा।'' हरि की इन बातों को सुन कर लक्ष्मी को मन में आश्चर्य हुआ। उन्होंने हरि से इस रूप में कहा। ''हे हरि! वह वामाक्षी ने तुम पर मोह से कामना की है? उसे क्षमा करने के आप के प्रयत्नों को भी मैंने देखा है। हे केशव! मन में मुझे बहुत अच्छा लगा है। हे कमलाक्ष! विवाह की तैयारी में मंगलकर से हल्दी आदि भेज कर अब अपने को अशक्त बोलते हुए, चेहरा दिखाने के लिए मेरे पास दूत को भेजने से मैं भयभीत होकर आयी हूँ। प्रीति से और गौरव के साथ मैं नहीं आयी। अगर मैं पहले आऊंगी तो आप के विवाह को स्वीकार नहीं करूँगी। ऐसे संशय से मुझे पहले नहीं बुलाया गया। आप ने ऐसा काम किया। ठीक है विवाह के कारण ही सही मुझे बुलाया गया। मैं आयी और मुझे आप को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। हे कमलनाथ! यही मेरे लिए बहुत है। धरती पर अगर आप विवाह करना चाहेंगे। मैं क्यों विघ्न डालूंगी? आप को मेरे होते भी कोई नहीं है। इसलिए आप के मन में विवाह की इच्छा पैदा हुई है। मुझे यह स्वीकार्य है। आप को अब कोई संशय नहीं करना चाहिए। शांति से आप उस कन्या के साथ विवाह कर लीजिए। हे महात्मा! कुल मिलाकर आप का सुख ही मेरा सुख है। हे चिन्मय रूपा! आप मनुष्य के रूप में इस पहाड पर चढ कर ग्वाले के हाथों में घायल हुए, वकुला ने आप की रक्षा की है। यह बहुत विचित्र है। मुझे अब क्या चाहिए। हे कमलाक्ष! तभी भृगु के कारण मैं आप से अलग हो गयी। मेरे वहाँ रहने पर भी मेरे मन में आप के ही रूप को पूरी तरह बसा कर जीवित रहूँगी। मैं वहीं सुखी रहूँगी। उत्साह से ब्रह्मादि के द्वारा किए जाने वाले इस विवाह को आप कर लीजिए।'' इस रूप में कहते आँखों में से आंसू बहाते सर झुका कर सिरि ने कहा। तब हरि ने संशय करते हुए लक्ष्मी की दीनावस्था को देखकर उनसे इस रूप में कहा। ''हे सिरि! तुम अपने मन में चिंता मत करो। तुम से बढकर और कोई आप्त मुझे कहीं भी नहीं है। तुम ही मेरे लिए देव हो, तुम ही मेरे लिए प्राण हो, तुम ही मेरे लिए भाग्य हो। यह निश्चय है। इसलिए तुम राजी होकर मेरे विवाह करे या न करे मेरे लिए दोनों ठीक है। मुझे क्या चाहिए। लोक विडंबनार्थ के रूप में तुम्हारे प्रयत्न आज कालानुसार ही हुए।'' इस रूप में आंखों से आँसू बहानेवाले माधव को देखकर सिरि ने इस रूप में कहा। ''हे देव! इस रूप में कहना आप को शोभा नहीं देता।'' हँसते हुए इस रूप में कहा।

क्रमशः

माघ मास का महत्व

- श्री अवधेश कुमार शर्मा

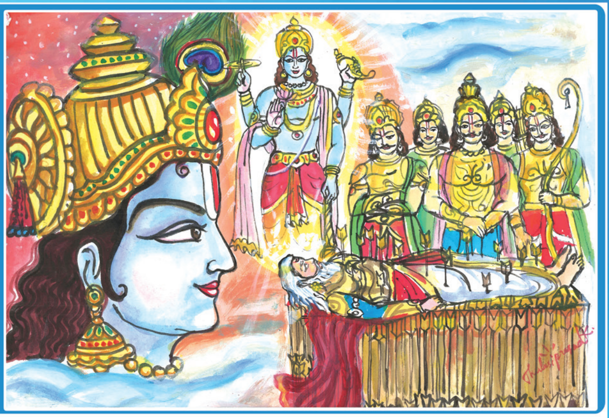

परिचय

माघ मास (हिन्दू पंचांग के अनुसार माघ माह) हिन्दू धर्म में एक अत्यंत पुण्यकारी और आध्यात्मिक महत्व वाला मास माना गया है। यह मास सामान्यतः ग्रेगोरियन कैलेंडर के जनवरी-फरवरी के मध्य आता है। शास्त्रों में माघ को तप, दान, जाति-मुक्ति और पितृकर्मों के लिए विशेष रूप से लाभदायी बताया गया है। इस आलेख में हम शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, ऐतिहासिक धार्मिक प्रथाएँ, प्रमुख त्यौहार-तिथियाँ, नियम-कर्तव्य (दैनिक व विशेष), व्रत-विधियाँ और माघ मास के आध्यात्मिक-लाभों का विस्तारपूर्वक विवेचन करेंगे।

1. ऐतिहासिक-शास्त्रीय पृष्ठभूमि और माहात्म्य

शास्त्रीय पुराणों (उदाहरण : पद्मपुराण, नारदपुराण, स्कन्दपुराण, गरुड़पुराण आदि), स्मृतियों (मनुस्मृति), तथा महाकाव्यों/पुराणों में माघ मास का विशेष महत्व मिलता है। इन ग्रन्थों के सामान्य सूत्र ऐसे हैं :

स्नान (तीर्थस्नान) का फल : माघ में किये गए स्नान (विशेषकर तीर्थों में या पवित्र नदियों में) को अनेक तीर्थ स्नानों के समकक्ष या उससे अधिक फलप्रद बताया गया है। इसलिए माघ में स्नान का महत्व बार-बार उद्धृत है।

तिल (तिल-दान, तिल-हवन) का फल : माघ में तिल से संबंधित कर्म (तिल-दान, तिल-हवन, तिल मिश्रित स्नान) पित्रोन्नति तथा पाप नाश के लिए विशेष फलदायी माने गए हैं।

दान : माघ मास में किया गया दान अन्न, वस्त्र, तिल, घृत तथा गुड़ आदि का अत्यन्त फलदायी माना जाता है - कई ग्रन्थों में इसे सामान्य मासों की तुलना में कई-गुणा फल देने वाला कहा गया है।

तप और ब्रह्मचर्य : माघ को साधना, उपवास और संयम का महीना भी कहा गया है - इस मास में व्रत और ब्रह्मचर्य का विशेष पुण्य लिखा है।

पितृकर्म और तर्पण : माघ में कुछ तिथियों पर पित्रों को तर्पण और श्राद्धक कर्म करने का आदर्श समय माना गया है।

संक्षेप : शास्त्रों का सामान्य संदेश यही है - माघ मास को संयम, दान, स्नान और तर्पण के लिए उत्तम काल माना जाए, जिससे आध्यात्मिक एवं लोकहितकारी फल मिलते हैं।

2. माघ मास की प्रमुख तिथियाँ और पर्व

(यहाँ तिथियों का नाम और उनका सांकेतिक महत्व दिया जा रहा है; निश्चित तिथि-विवरण प्रत्येक वर्ष के पंचांग के अनुसार बदलता है।)

माघ-संक्रमण / मकर संक्रान्ति (कुछ परम्पराओं में माघ आरम्भ) : सूर्य के मकर राशि में प्रवेश को मनाते

हैं; यह पर्व सूर्यपूजन, दान और नवपाथ प्रारम्भ का चिह्न है।

माघ शुक्ल/कृष्ण पक्ष की विभिन्न एकादशियाँ/अष्टमियाँ: इनमें से कुछ पक्षों पर विशिष्ट व्रत (जैसे माघ-एकादशी) आते हैं - व्रत, कथा एवं गुरु-पूजन संयोजित होते हैं।

भीष्माष्टमी (माघ शुक्ल अष्टमी) : शास्त्रीय स्मृति के अनुसार भीष्म पितामह का महापरिणाम इसी मास की अष्टमी को हुआ - इस दिन पितृकर्म/तर्पण तथा शास्त्र पुरोहितों द्वारा स्मरण होता है।

वसंत पंचमी (सरस्वती पूजा) : माघ के अन्तिम दिनों/ फाल्गुन आरम्भ के निकट आती वसंत पंचमी का सम्बन्ध विद्या-पूजन से है। कुछ परम्पराओं में इसे माघ के अंत में जोड़ा जाता है।

माघ पूर्णिमा : इस दिन का स्नान और दान विशेष फलदायी माना जाता है; कई तीर्थ-क्षेत्रों में माघ मेला/ स्नान का आयोजन होता है। (उदाहरण : संगम स्थानों पर माघ मेला)।

माघ मेला / कुंभ/अर्द्ध-कुंभ संबंधित तिथि : जहाँ-जहाँ कुंभ/अर्द्ध-कुंभ आयोजित होता है, माघ में तीर्थयात्रियों और साधुओं की भीड़ दिखाई देती है - यह धार्मिक आयोजन भी माघ के महत्व को बढ़ाते हैं।

नोट : उपर्युक्त पर्व/तिथियाँ क्षेत्रीय परम्परा और पंचांग के अनुसार अलग-अलग हो सकती हैं; अतः - हर साल के स्थानीय पंचांग से पुष्टि आवश्यक है।

3. माघ मास की प्रमुख धार्मिक कर्म और विधियाँ

3.1. प्रातः-स्नान (माघ-स्नान)

समय : ब्रह्ममुहूर्त या उषःकाल।

विधि : शुद्ध जल (सर्वथा यदि संभव हो तो नदी/तीर्थ का जल) से स्नान; यदि सम्भव हो तो तिल मिश्रित एक भाग जल का प्रयोग; स्नान के पश्चात सूर्यदेव को अर्घ्य दें और संकल्प करें।

उद्देश्य : शास्त्रों के अनुसार यह स्नान पापों का क्षय करता है और आत्मसंस्कार को प्रबल करता है।

3.2. तिल-दान, तिल-हवन और तिल-भोजन

तिल-दान : काले तिल व आत्मीय/गरीब व्यक्तियों को दान करने से पितृसंतोष और पापप्रायश्चित का फायदा मिलता है।

तिल-हवन : तिल, घृत और स्वीकृत सामग्री से हवन करने पर पितृतृप्ति और वैदिक फल की प्राप्ति मानी जाती है।

तिल-भोजन : ब्राह्मण देने के साथ तिल से बने व्यंजन (गुड़-तिल लड्डू इत्यादि) का वितरण किया जाता है।

3.3. दान-विधियाँ

प्रकार : अन्न दान, वस्त्र दान, जल-घड़ा दान, चारा/भोजन वितरण, गुरुकुल/शिक्षा हेतु अनुदान।

समय : माघ पवित्र तिथियों (जैसे पूर्णिमा, संक्रान्ति, विशेष स्नान-दिन) में दान को अधिक फलदायी माना जाता है।

3.4. जप-ध्यान और शास्त्र-पाठ

विष्णु जप/नामस्मरण : 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय', 'श्री विष्णु सहस्रनाम' पाठ आदि का नियमित पाठ।

गीता/भागवतम् पाठ : घर में सत्संग, भगवद्गीता का पाठ एवं शास्त्रवाचन।

3.5. पितृकर्म और तर्पण / श्राद्ध के आस-पास के कर्म :

माघ में कुछ तिथियाँ पित-कर्म के लिये अनुकूल मानी जाती हैं - पुण्यतिथि पर तर्पण, पितृसन्तोष हेतु तिलदान व तर्पण का विशेष निर्देश। (क्षेत्रीय रीति-रिवाज देखें।)

3.6. उपवास और ब्रह्मचर्य

उपवास : माघ में कुछ लोग एकादशी व्रत, विशेष दैनंदिन उपवास या आध्यात्मिक संयम के लिये नित्य फलाहार अपनाते हैं।

ब्रह्मचर्य / संयम : मद्य, मांस तथा अनुचित वाणी/आचरण से परहेज़ करने का नियम शास्त्रों में बारंबार प्रतिपादित है।

4. माघ मास का आदर्श दैनिक अनुशासन (नियमित दिनचर्या - उदाहरण)

(यह एक सुझावात्मक दिनचर्या है जिसे घर/समुदाय की परिस्थितियों के अनुसार अपनाया जा सकता है।)

1. सुबह - ब्रह्ममुहूर्त : उठकर स्वच्छता, आचमन।

2. स्नान : नदी/गंगाजल या शुद्‌ध जल से स्नान, तिल मिश्रित जल का प्रयोग यदि संभव हो।

3. सूर्य-अर्घ्य और प्रणाम : सूर्य देव को अर्घ्य, ग्रहणीय मंत्रोच्चारण।

4. जप/ध्यान : विष्णु नाम या किसी देवतास्मरण का जप (कम से कम 108 जप)।

5. शास्त्र-पाठ : गीता/भागवतम् या पुराणकथा का पाठ/सुनना।

6. दान-कर्म : तिल/अन्न/वस्त्र का दान; गरीबों/पंडितों को भोजन कराना।

7. दिवस पूजन : शाम को दीपदान, किसी आराध्य का पूजन और सत्संग।

8. रात्रि सम्मिलन : आत्म-चिंतन, दिनभर के कर्मों का सम्यक् विश्लेषण और ब्रह्मचर्य का अभ्यास।

5. व्रत-विधियाँ (कुछ लोकप्रिय व्रत और अनुष्ठान)

5.1. माघ-एकादशी (यदि आता हो)

विधि : निर्जला या फलाहारी उपवास; पढ़ना/कथा सुनना; दान।

फल : पापकर्मों में शोधन; मोक्षमार्ग में सहायक।

5.2. विष्णु/शिव समर्पित उपवास

कुछ परम्पराओं में माघ में विष्णु-वंदना और शिवपूजन दोनों चलन में हैं। पूजाविधि क्षेत्रीय रीति के अनुसार चलाई जाती है।

5.3. तिल-दान-व्रत

विशेषकर माघ मास में तिल/गुड़ दान करना और ब्राह्मणों को भोजन कराना अत्यधिक पुण्यदायी माना गया है।

क्रमशः

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

संख्या 106 श्रीरंगनाथ यादवराय के 19वें राज्य वर्ष (सन् 1355-56 ई.) का है। इसमें श्री वेंकटेश्वर की उत्सवमूर्ति को मलैकिनियनिन्र-पेरुमाल कहा गया है। इस संदर्भ में श्री वेंकटेश्वर अपनी दो देवेरियों, नाच्चिमारों के साथ विराजमान होते हैं। ये भगवान के साथ चेदियराय-मंटपम् में पहले विराजते हैं। यह हर उत्सव के चौथे दिन पर घटित होता है। उस समय मंदिर भण्डार से उपयुक्त वस्तुओं से प्रसाद समर्पण भी होता है। ये सारे कार्यक्रम 400 पणम् के धरोहर से अर्जित सूद से संपन्न होते हैं। यह तलुवक्कुल बनाम पल्लवरायर द्वारा श्री भण्डारम् में धरोहर जमा करने पर ही हुआ है।

[[यही पहला अवसर है जब हम 'मलैकिनियनिन्र पेरुमाल' और उनकी दो देवेरियों - यथा श्रीदेवी और भूदेवी का उल्लेख पाते है। इस से पहले 'नाच्चियार' का उल्लेख संख्या 104 में है। लेकिन वहाँ ''मलैकिनियनिन्र-पेरुमाल का उल्लेख मिलता नहीं है। हो सकता है कि उसका कारण उस अभिलेख का खण्डित या जीर्ण होना ही हो। इससे यह भी सिद्ध होता है कि ये तीनों मूर्तियाँ नये रूप से तैयार करवाई गयीं हो और व्यवहार में लायी गयीं हो। इसका समय भी लगभग 14वीं सदी (ई. के बाद) के मध्य का होगा। इस पुनःस्थापन का एक कारण यह भी हो सकता है कि मनवाल-पेरुमाल की चाँदी की मूर्ति जो रानी सामवाय द्वारा पहले समर्पित हुई है वह बहुत छोटी है। सामवाय ने इस मूर्ति को 7वीं शती में समर्पित किया और शायद भगवन की देवियाँ उस समय नहीं थीं। इस कारण से उस मूर्ति को अलग रखा गया। इसके द्वारा कुछ अन्य उत्सव चलते होंगे। नये सिरे से तीन नयी मूर्तियों को आगे किया गया। इसमें आगे यह भी निर्देशित है कि अन्न-प्रसादम के लिए देवदान करनेवाले को भगवान को समर्पित भोग का चौथा अंश मिलेगा। यह एक नया प्रावधान है। पूर्व समर्पणों में कहीं भी इस प्रकार के प्रावधान की गुंजाइश नहीं रही है। भगवान के लिए पूर्व समर्पण सभी में इस प्रकार के अंश देय की बात नहीं है।

संख्या 74 और संख्या 75 में दो और उत्सवों का उल्लेख मिलता है - ये पुरट्टासि और चित्तिरै मासों में मनाये जाते हैं। संख्या 73 और 78 में अन्न-प्रसादों के प्रावधानों का उल्लेख है। ये कुछ मंटपों में वितरित होते थे। हो सकता है कि ये मंदिर से बाहर की व्यवस्थाएँ हैं। ये चारों पुरालेख

(शिलालेख या ताम्रपत्र) तेलुगु पल्लव राजाओं के समय से संबन्धित हैं। प्रधानतः विजयगंड गोपाल और उनके बाद के। इनमें गंडगोपालन माडै या केवल माडै शब्द का प्रयोग है। इस समय के कुछ खंडित पुरालेख हैं और उनका समय संभवतः सन् 1255 और 1260 के बीच का माना जा सकता है। लेकिन ये किस मूर्ति (एक या द्वय या त्रय) की ओर संकेत करते हैं, स्पष्ट नहीं है। किनका माड़ावीथियों में उत्सवमूर्ति उपयोग होता है स्पष्ट नहीं है। मंटपों और पुष्पवाटिकाओं के संदर्भ में इसी प्रकार की बात उठती है। हो सकता है कि उस समय के रथों पर प्राप्त स्थल या उनकी स्थिति के अनुसार दी गई देवदान हो!]]

संख्या 107 श्रीरंगनाथ, यादवराय के राज्य काल का है। इसमें तिरुमल मंदिर के मुखद्वार पर संपन्न होनेवाले प्रसादों के संबन्ध में उल्लेख है। इन्हें ''तिरुप्पोनकम्'' कहते हैं। यह समर्पण तिरुमल की उत्सवमूर्तियों के लिए और ''तिरुवायमोलि'' (तमिल प्रबन्धम के गीतों) के गायन के लिए हैं।

[[संख्या 61 में ''तिरुमोलि'' के वाचन का उल्लेख मिलता है। यह सन् 1264 ई. का है। संख्या 74 में आंडाल द्वारा रचित तिरुप्पावै वाचन का उल्लेख है जो श्री वेंकटेश्वर मंदिर में संपन्न होता है। इसका समय सन् 13वीं सदी के उत्तरार्द्ध का है। संख्या 107 में भी ''तिरुवायमोलि'' का उल्लेख है जो श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में संपन्न होता है। यह सन् 14वीं सदी के तृतीय त्रिमास भाग का है। इस प्रकार यह विदित होता है कि चौदहवीं सदी तक ये दोनों मंदिर वैष्णव संप्रदाय के धार्मिक अनुष्ठानों की परंपरा से अनुबद्ध हो गये हैं।]]

संख्या 109 में एक तमिल पद्य है। उसके अनुसार राजा श्रीरंगनाथ यादवराय ने अपने शत्रुओं को हराकर उनको पहाडों पर वास करने के लिए विवश किया है। अपनी विजय के उपलक्ष्य में उन्होंने एक महल का निर्माण वेंकटाद्रि पर करवाया। इतना ही नहीं, विजय सूचक के रूप में अपने घायल वक्षःस्थल पर एक पुष्पहार भी डाल लिया है। यह राजा के 16वें राज्य वर्ष में (सन् 1352-53 ई.) घटित हुआ था। शायद यही भवन आजकल का श्रीहाथीरामजी महाराज का मठ है। तिरुमल पर यह मठ महंतों का मठ है।

संख्या 110, चालुक्य नारायण की विभिन्न बिरुद (उपाधियों) की गणना करता है। इस संबन्ध में सूर्यवंशी राम के रावण से युद्ध का उल्लेख भी है (सम कहने में)। इस में विकारी नाम संवत्सर की सूचना है जो शक संवत् 1281 में आता है। यह वर्ष राजा श्रीरंगनाथ यादवराय के शासन वर्ष के 24वाँ वर्ष है (सन् 1360 ई.)। इस तरह यह सूचित होता है कि वे दो राजाओं - हरिहर-I और बुक्का-I के समकालीन थे। हरिहरराय और बुक्कराय संगम वंश के राजा थे और उन्होंने सन् 1336 में विजयनगर साम्राज्य की नींव डाली थी। हो सकता है कि चालुक्य नारायण ने इनके अधीन होकर कार्य किया हो।

संख्या 113 में 32 गायों और एक बैल के दान का उल्लेख है। यह दान, ज्योति प्रज्वलन के लिए चिरस्थायी देवदान है। यह भी यादवराय के समय में ही संपन्न किया गया है। इसके दाता एर्रमंचि पेरिय - पेम्मा नायक्कर हैं जो श्री महानायक्कर उपाधि से विभूषित हैं। इन्हें ''भाषैक्कुत्तप्पुव-रायरन गंड'' भी कहा गया है। तिरुमल पर वसंत ऋतु के संदर्भ में मनाये जानेवाले वसंत उत्सव में उन्होंने भाग लिया। उसी संदर्भ में उक्त उपाधियों का उल्लेख है।

संख्या 114 भी उक्त प्रकार के 32 गायों और एक वृषभ (बैल) के दान का उल्लेख करता है। यह नंदाविलक्कु एक शाश्वत दीप ज्योति के लिए है। तिरुवेंकटम् उडैयान के लिए यह दान पाप्पुनायक्कर - पेम्मु-नायक्कर द्वारा प्रदान किया गया है। इनकी दो उपाधियाँ भी हैं - महा नायनकाचार्य और भाषैकुट्टप्पुव रायरगंडन। यह अभिलेख शारवरी वर्ष (सन् 1361 ई) का है। यह दाता संख्या 113 के दाता के छोटे भाई थे। दोनों पाप्पु-नायक्कर के पुत्र थे। लगता है कि दोनों भाई श्रीरंगनाथ यादवराय की सेवा में रहे होंगे। श्रीरंगनाथ यादवराय की मृत्यु एक वर्ष पहले ही घटित होने के कारण (विकारी संवत्सर में) संख्या 114 शारवरी वर्ष का होने के कारण, राजा के नाम का उल्लेख नहीं हुआ हो।

संख्या 116 में एक संस्कृत श्लोक है। इसमें शौरि भगवान (विष्णु भगवान) को होबल राजा द्वारा एक आभूषण दान में देने का उल्लेख मिलता है। यह आभरण भक्तों के मनों को आह्लाद पहुँचानेवाला भी बताया गया है। यह भगवान श्री वेंकटेश्वर के वरद हस्त पर अवस्थित होकर वैकुंठत्व के गुण और शांति का स्फुरण कराता है। विपुलता, अनंतता, उज्ज्वलता तथा परमानंद प्रदान करता है जो केवल वैकुण्ठ में ही मिल सकता है। यह पुनः वेंकटाद्रि पर ही संभव है।

संख्या 117 में तमिल का एक पद्य है। यह एक आभरण के दान की सूचना देता है। यह 'तिरुक्कैमलर' आभरण है। यह उत्तर वेंकट पर्वत पर अधिवसित भगवान के लिए है जो सुगन्ध पुष्पों की वाटिका में रहते हैं। यह दान तंजाय (तंजाऊर) के यादव राजा द्वारा संपन्न किया गया है। यह राजा होबल अथवा ओबलनाथन् अपने को तंजाऊर राज्य के अधिपति मानता है। उसका समय और अन्य वंशीय विवरण नहीं मिलते हैं। हो सकता है कि उसका संबन्ध स्थानीय यादव शासकों से हो अथवा मैसूर के देवगिरि यादव राजाओं से। संख्या 148 इस पर्वत को श्रीशैल पर्वत बताता है।

लगभग 60 पुरालेख 13वीं और 14वीं सदियों के और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना से पूर्व के हैं। ये खण्डित हैं और इनसे असंबद्ध सूचनाएँ ही मिलती हैं (जो विश्वनीय भी कम लगती)। उनमें संख्या 162 और संख्या 163 हैं। ये मठों से और नंदनवनम् से संबन्धित हैं। संख्या 104 में उल्लेखित श्रीरंगनाथ यादवराय के तीसरे शासन वर्ष में जीयर को सौंपी गयी उत्सवमूर्तियों से संबन्धित बातों का ही पुनरुल्लेख इनमें हैं। वे हैं अरिशाणलयन और वन - शठकोपन पुष्पवाटिकाएँ। संख्या 162 से मठ की आमदनी से कुछ आभरण और मणियों की बात सूचित होती है। ये कुछ मूर्तियों के लिए हैं। संख्या 163 जिसका समय श्रीरंगनाथ के 5वें राज्य वर्ष (सन् 1341-42 ई.) का है, यह पुष्ट करता है कि जीयर के देहावसान के उपरांत उनके उत्तराधिकारी को पूर्व सम्मत नियम के अनुसार स्वीकृत राशि को (मठ को प्रदत्त दान राशि को) अदा करना है और मठ से संबन्धित करों की वसूली से खर्च उठाना है। यह खर्च, पुष्पवाटिकाओं में विलसनेवाली देवतामूर्तियों के दो दिनों के उत्सवों से संबन्धित है। संख्या 111 और 112 बताते हैं कि यही श्रीमान महाप्रधानी इम्मडि राहुत्तरायन सिंगय दण्णायक्कन का मठ है। हकदार सितकरगंडन है।

संख्या 160 में ''विजय प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा को लेकर'' और ''विजय स्तंभ स्थापन'' शब्दों से इस पुरालेख का संबन्ध जटावर्मन सुंदर पाण्ड्य-I से शायद जोडा जा सकता है।

खंडित पुरालेख संख्या 161 एक विलक्षण पुरालेख है। इसमें उल्लिखत है - ''- - - - श्रेष्ठ राजा के दिवंगत होने से - - - सही मार्ग के अनुसरण से - - -''। इस सूचना मात्र से यह अवगत होता है कि इस में दिवंगत राजा श्रीरंगनाथ यादवराय हैं जिनका उल्लेख संख्या 109 में है। उसके अनुसार उन्होंने अपने 16वें राज्य वर्ष में एक महल का निर्माण करवाया। अपने शत्रु राजाओं पर विजय पाने के बाद उसमें वे रहे होंगे। उसी में उन्होंने अपनी अंतिम साँस ली होगी। वेंकट पर्वत पर उनके 24वें शासन वर्ष में (सन् 1359 - 60 ई.) यह घटित हुआ होगा। (संख्या 110) उसी संदर्भ में उनके उत्तराधिकारी का भी चुनाव हुआ होगा।

क्रमशः

वसंतपंचमी

- श्री ज्योतीन्द्र के.अजवालिया

वसंत ऋतु (या माघ मास की शुक्ल पक्ष) की पंचमी को मनाए जाने वाला पर्व वसंत पंचमी कहलाते हैं। वसंतोत्सव भी कहलाते हैं।

'वसंत पंचमी' या **'श्री पंचमी'** हिन्दू त्यौहार है। इस दिन विद्या की देवी सरस्वती, कामदेव और विष्णु की पूजा की जाती है। यह पूजा विशेष रूप से भारत, बांग्लादेश, नेपाल और कई राष्ट्रों में बड़े उल्लास से मनायी जाती है। इस दिन पीले वस्त्र धारण करते हैं। शास्त्रों में वसंत पंचमी का - शास्त्रों तथा अनेक काव्यग्रंथों में भी अलग-अलग ढंग से इसका चित्रण मिलता है।

वसंत पंचमी का परिचय

प्राचीन भारत में पूरे साल को जिन छह ऋतुओं में बाँटा गया है उनमें वसंत लोगों का सबसे मनचाहा मौसम है। जब फूलों पर बाहर आ जाती, खेतों में सरसों का फूल मानो सोना चमकने लगता, जौ और गेहूँ की बालियाँ खिलने लगतीं, आमों के पेड़ों पर मांजर आ जाता और हर तरफ रंग-बिरंगी तितलियाँ मँडराने लगतीं। भर-भर भंवरे भंवराने लगते। वसंत ऋतु का स्वागत करने के लिए माघ महीने के पाँचवे दिन एक बड़ा उत्सव मनाया जाता है। जिसमें विष्णु और कामदेव की पूजा होती हैं। यह वसंत पंचमी का त्यौहार कहलाता है।

पौराणिक कथा

उपनिषदों की कथा के अनुसार सृष्टि के प्रारंभिक काल में ब्रह्म ने जीवों, खासतौर पर मनुष्य योनि की रचना की। लेकिन अपनी सर्जना से वे संतुष्ट नहीं थे, उन्हें लगता था कि कुछ कमी रह गई है जिसके कारण चारों और मौन छाया रहता है। हालाँकि उपनिषद व पुराण ऋषियों को अपना अपना अनुभव है, अगर यह हमारे पवित्र सत् ग्रंथों से मेल नही खाता तो यह मान्य नही है।

तब ब्रह्माजी ने इस समस्या के निवारण के लिए अपने कमण्डल से जल अपने हथेली में लेकर संकल्प

स्वरूप उस जल को छिड़कर भगवान श्री विष्णु की स्तुति करनी आरम्भ की। ब्रह्माजी के किये स्तुति को सुन कर भगवान विष्णु तत्काल ही उनके सम्मुख प्रकट हो गए और उनकी समस्या जानकर भगवान विष्णु ने आदिशक्ति दुर्गा माता का आह्वान किया। विष्णु जी के द्वारा आह्वान होने के कारण भगवती दुर्गा वहाँ तुरंत ही प्रकट हो गयी तब ब्रह्म एवं विष्णु जी ने उन्हें इस संकट को दूर करने का निवेदन किया।

ब्रह्माजी तथा विष्णुजी बातों को सुनने के बाद उसी क्षण आदिशक्ति दुर्गा माता के शरीर से स्वेत रंग का एक भारी तेज उत्पन्न हुआ जो एक दिव्य नारी के रूप में बदल गया। यह स्वरूप एक चतुर्भुजी सुंदर स्त्री का था जिनके एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ में वर मुद्रा थे। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी। आदिशक्ति श्री दुर्गा के शरीर से उत्पन्न तेज से प्रकट होते ही उन देवी ने वीणा का मधुरनाद किया जिससे संसार के समस्त जीव-जन्तुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी। तब सभी देवताओं ने शब्द और रस का संचार कर देने वाली उन देवी को वाणी की अधिष्ठात्री देवी ''सरस्वती'' कहा।

फिर आदशिक्ति भगवती दुर्गा ने ब्रह्माजी से कहा कि मेरे तेज से उत्पन्न हुई ये देवी सरस्वती आपकी पत्नी बनेंगी, जैसे लक्ष्मी श्री विष्णु की शक्ति हैं, पार्वती महादेव शिव की शक्ति हैं उसी प्रकार ये सरस्वती देवी ही आपकी शक्ति होंगी। ऐसा कह कर आदिशक्ति श्री दुर्गा सब देवताओं के देखते-देखते वहीं अंतर्धान हो गयीं। इसके बाद सभी देवता सृष्टि के संचालन में संलग्न हो गए।

सरस्वती को वागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादनी और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। वसंत पंचमी के दिन को इनके प्रकटोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। ऋग्वेद में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है- अर्थात ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं। हममें जो आचार और मेधा है उसका आधार भगवती सरस्वती ही हैं। इनकी समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से प्रसन्न होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी और तभी से इस वरदान के फलस्वरूप भारत देश में वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की भी पूजा होने लगी जो कि आज तक जारी है।

वसंत का प्राकृतिक वर्णन

वसंत ऋतु आते ही प्रकृति का कण-कण खिल उठता है। मानव तो क्या पशु-पक्षी तक उल्लास से भर जाते हैं। हर दिन नयी उमंग से सूर्योदय होता है और नयी चेतना प्रदान कर अगले दिन फिर आने का आश्वासन देकर चला जाता है। यों तो माघ का यह पूरा मास ही उत्साह देने वाला है, पर वसंत पंचमी (माघ शुक्ल) का पर्व भारतीय जनजीवन को अनेक तरह से प्रभावित करता है।

प्राचीनकाल से इसे ज्ञान और काल की देवी माँ सरस्वती का जन्मदिवस माना जाता है। जो शिक्षाविद भारत और भारतीयता से प्रेम करते हैं, वे इस दिन माँ शारदे की पूजा कर उनसे और अधिक ज्ञानवान होने की प्रार्थना करते हैं। कलाकारों का तो कहना ही क्या? जो महत्व सैनिकों के लिए अपने शस्त्रों और विजयदशमी का है, जो विद्वानों के लिए अपनी पुस्तकों और व्यास पूर्णिमा का है, जो व्यापारियों के लिए अपने तराजू,

बाट, बहीखातों और दीपावली का है, वही महत्व कलाकारों के लिए वसंत पंचमी का है। चाहे वे कवि हों या लेखक, गायक हों या वादक, नाटककार हों या नृत्यकार, सब दिन का प्रारम्भ अपने उपकरणों की पूजा और माँ सरस्वती की वंदना से करते हैं।

वसंत पंचमी के समय सरसों के पीले-पीले फूलों से आच्छादित धरती की छटा देखते ही बनती है।

पौराणिक महत्व

इसके साथ ही यह पर्व हमें अतीत की अनेक प्रेरक घटनाओं की भी याद दिलाता है। सर्वप्रथम तो यह हमें त्रेतायुग से जोड़ती है। रावण द्वारा सीता के हरण के बाद श्रीराम उनकी खोज में दक्षिण की ओर बढ़े। इसमें जिन स्थानों पर वे गये, उनमें दण्डकारण्य भी था। यहीं शबरी नामक भीलनी रहती थी। जब राम उसकी कुटिया में पधारे, तो वह सुध-बुध खो बैठी और चख-चखकर मीठे बेर राम जी को खिलाने लगी। प्रेम में पगे जूठे बेरों वाली इस घटना को रामकथा के सभी गायकों ने अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया।

दंडकारण्य का वह क्षेत्र इन दिनों गुजरात और मध्य प्रदेश में फैला है। गुजरात के डांग जिले में वह स्थान है जहाँ शबरी माँ का आश्रम था। वसंत पंचमी के दिन ही रामचंद्र जी वहाँ आये थे। उस क्षेत्र के वनवासी आज भी एक शिला को पूजते हैं, जिसके बारे में उनकी श्रद्धा है कि श्रीराम आकर यहीं बैठे थे। वहाँ शबरी माता का मंदिर भी है।

वसंत पंचमी पूजा विधान

वसंत पंचमी की पूजा पद्धति में सबसे पहले स्नान करके पीले या सफेद वस्त्र पहनें। इसके बाद चौकी पर माँ सरस्वती की प्रतिमा स्थापित करें, कलश स्थापना करें बाद में गणेशजी व नवग्रहों की पूजा करें। माँ सरस्वती को पीले फूल, रोली, चंदन, हल्दी, केसर और पीले मीठे चावल (पीले पुलाव) का भोग चढाएँ। पूजा के अंत में माँ सरस्वती की आरती करें और सरस्वती मंत्र या सरस्वती वंदना का जाप करें।

पूजा विधि

1. स्नान और वस्त्र धारण : सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और पीले, वसंती या सफेद वस्त्र पहनें।

2. पूजा स्थल की तैयारी : पूजा स्थल को साफ करें और एक चौकी पर पीले या लाल वस्त्र बिछाकर माँ सरस्वती की मूर्ति या चित्र स्थापित करें।

3. कलश स्थापन : कलश स्थापना करें और फिर गणेश जी व नवग्रहों की पूजा करें।

4. श्रृंगार और सामग्री : माँ सरस्वती को पीले रंग की चुनरी अर्पित करें। रोली, चंदन, हल्दी, केसर, अक्षत (चावल), पीले और सफेद फूल चढ़ाएँ।

5. वाद्य यंत्र और पुस्तकें : पूजा स्थल पर वाद्य यंत्र और पुस्तकें अर्पित करें।

6. मंत्रोच्चार : माँ सरस्वती के मंत्रों का जाप करें, जैसे : ''ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः।''

7. भोग और आरती : पीले चावल, बेसन के लड्डू, हलवा या अन्य पीले फल-मिठाइयों का भोग लगाएँ। घी का दीपक जलाकर माँ की आरती करें।

8. प्रसाद वितरण : पूजा के बाद भोग को प्रसाद के रूप में परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों में बांटें।

इस तरह माँ सरस्वती की पूजा आराधना करके वसंत का स्वागत करें।

श्री प्रपन्नामृतम्

(60वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री रामानुजाचार्य का वैभव (1)

प्राचीन समय में एक बार वैकुण्ठधाम में भगवान श्रीमन्नारायण को वैकुण्ठ के सेनापति विष्वक्सेनजी ने हँसते हुए कहा कि - ''भगवान! भूतल का भार उतारने के लिये मैं भी वहाँ पर अवतार लेना चाहता हूँ। वहाँ जाकर अपने सदुपदेशों के द्वारा मृत्युलोक के लोगों को सत्पथ दिखलाकर वैकुण्ठधाम में भेजने की मेरी अभिलाषा है।''

भगवान की सम्मति प्राप्त करके श्री विष्वक्सेनजी ने दक्षिण भारत के कुरुका नगर में अवतार लिया और 'श्री शठकोपाचार्य' के नाम से प्रख्यात हुये। विषयासक्त कलियुगी संसारी जीवों को देखकर उन्होंने दृढ़तापूर्वक अपने नेत्र बन्द कर लिये और 16 वर्ष तक एक इमली के वृक्ष के खोखले (कोटर) में निवास करते हुए भगवद्भजन में अपना जीवन बिताया। एक दिन अकस्मात उनके मन में विचार आया कि जिस कार्य को करने के लिये मैं यहाँ आया हूँ वह न करके इस मृत्युलोक में आने के बाद मैंने इतना समय इस इमली के कोटर में एकान्त में भगवान का ध्यान करते हुये ही व्यतीत किया, मैंने किसी को भी उपदेश न देकर यहाँ आकर भगवच्चिन्तन में ही लीन हुआ रहा। मैंने जो प्रतिज्ञा भगवान के सम्मुख की थी, वह मेरे द्वारा पूर्ण नहीं हो सकी। भगवान के वियोग में मैं कुछ भी कार्य न कर सकूँगा। लोगों के उद्धार के लिये तो इस भूतल पर आदिशेष श्री रामानुजाचार्य का अवतार होना चाहिये। वे मनुष्यों को समस्त पापों से छुड़ाकर उनके आवागमन मिटाकर उन्हें वैकुण्ठ धाम प्रदान करेंगे। उनके सम्बन्ध मात्र से ही जीवों को वैकुण्ठ की प्राप्ति हो जायेगी। त्रिकाल महामुनि शठकोपसूरि ने ऐसा विचार करके लोगों को बतलाया कि- ''आज से चार हजार वर्ष के बाद में इस पृथ्वी पर कोई ऐसे महापुरुष अवतार लेंगे, जो कि समस्त पापों को ही नष्ट कर देंगे, जिसके कारण से रौरवादि सभी नरक स्वयंमेव मिट जायेंगे और यमराज निष्कर्म होकर बैठा रहेगा।''

श्री शठकोप सूरि के द्वारा की गयी उपरोक्त भविष्यवाणी परम्परा से उस समय के लोगों के मुख से लेकर यतिराज के अवतार के समय तक चली आई। उन्होंने तो सहस्रगीति में भी यतिराज के अवतार की

सूचना देने वाले विषय एवं उनके सामुद्रिक लक्षणों का वर्णन करके उसी इमली के वृक्ष के कोटर में देह त्यागकर परमपद प्राप्त किया।

प्राचीन समय में वीर नारायणपुर नामक ग्राम में श्री नाथमुनि नामक एक प्रसिद्ध महात्मा निवास करते थे। उन्होंने एक दिन वहाँ तालाब के तट पर खड़े होकर सब लोगों से कहा कि- ''जैसे इस तालाब से जल बहकर खेतों में जाता है और वहाँ के पौधों को सींचता है वैसे ही भगवान श्रीमन्नारायण रूपी समुद्र से बहकर वेदरूपी जल सरिता श्री रामानुज यतिराज रूपी विशाल सरोवर में प्रविष्ट होगी। फिर वह जल अनेकों नालियों के द्वारा प्रवाहित होकर उपदेश रूप बनकर प्राणी रूपी सदस्यों को सींचकर हरा-भरा कर देगा।''

उपरोक्त महात्मा श्री शठकोपाचार्य और श्री नाथमुनि स्वामीजी की भविष्यवाणी यतिराज श्री रामानुजाचार्य के लिये सुस्पष्ट रूप में चरितार्थ होती है। त्रिकालज्ञ होने के कारण उन्होंने यह पहले ही बता दिया था कि यतिराज पृथ्वी पर अवतार ग्रहण करेंगे। श्री नाथमुनि स्वामी के हृदय में विद्यमान श्री रामानुजाचार्य ने कालान्तर में अवतार लेकर उनके द्वारा कहे गये विषयों का स्पष्टीकरण किया।

इस प्रकार से श्री शठकोप रूपी सामयिक मेघ ने श्रीमन्नारायण रूपी समुद्र से समस्त वेदार्थ रूपी जल को पुष्कल मात्रा में श्री नाथमुनि रूपी पर्वत पर बरसा दिया। वह जल श्री यामुनाचार्य रूपी नदी के द्वारा श्री रामानुजाचार्य रूपी तालाब में आकर सुस्थिर हो गया। अब वही जल उनके चौहत्तर पीठाचार्य शिष्यरूपी नालियों के द्वारा प्रवाहित होकर पृथ्वी पर सभी प्राणी रूपी सत्यों को सींच रहा है, यह कितना बड़ा आश्चर्य है। भूतल से लेकर चन्द्र-सूर्यलोक पर्यन्त फैले हुये श्री रामानुजाचार्य के वेदार्थ जल के वैभव को सुनकर श्री यामुनाचार्य ने हस्तिगिरि पर्वत के ऊपर जाकर और उनको दूर से देखकर कहा था कि- ''यह महात्मा श्रेष्ठ श्री रामानुजाचार्य यदि श्रीवैष्णव सिद्धान्त में प्रविष्ट हो जाय तो पृथ्वी के सभी मनुष्य महाभागवत बन जायेंगे। इसमें कुछ सन्देह नहीं।''

एक समय शिष्यगणों के साथ में यतिराज श्री रामानुजाचार्य श्री महापूर्णाचार्य स्वामी के दर्शन के लिये उनके घर पर गये। उन्हें देखते ही आचार्य श्री महापूर्णाचार्य ने तत्काल ही अपने आसन से उठकर उनको भक्तिपूर्वक साष्टांग प्रणाम किया। यह देखकर उनकी पुत्री को बड़ा ही विस्मय हुआ और फिर उसने अपने पिता से पूछा कि- ''पिताजी! आपने गुरु होकर यतिराज को साष्टांग कैसे किया?'' महान तत्व वेत्ता स्वामी श्री महापूर्णाचार्य ने पुत्री के प्रश्न को सुनकर उसके उत्तर में बतलाया कि- संसार में यतिराज के सदृश्य महात्मा एवं श्रेष्ठ पुरुष वर्तमान समय में अन्य कोई भी दृष्टिगत नहीं हो रहा है। इस सर्वोच्चता के कारण ही मैंने उन्हें प्रणाम किया है।

कुछ समय के बाद एक बार फिर जब कि श्री यतिराज स्नान करके लौट रहे थे तब श्री महापूर्णाचार्यजी ने उठकर उनको प्रणाम किया। यतिराज ने भी उनके अभिवादन का हाथ जोड़कर प्रत्युत्तर दिया। यह देखकर यतिराज के शिष्यों को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और उन्होंने यतिराज से पूछा कि- ''जब मार्ग में आपके गुरुदेव श्री महापूर्णाचार्यजी ने आपको प्रणाम किया जब आपने प्रत्युत्तर में केवल हाथ जोड़कर उनके अभिवादन को स्वीकार किया, इस रहस्य को जानने की हमारी प्रबल इच्छा है, क्योंकि गुरु कभी शिष्य को प्रणाम नहीं करता है और शिष्य कभी गुरु के प्रणाम का जबाव केवल हाथ जोड़कर ही नहीं देता है?'' यह सुनकर यतिराज ने कहा कि- ''गुरुदेव के द्वारा कथित

रीति से चलना ही शिष्य का लक्षण है। अतः मैंने उनके द्वारा कथित मार्ग से ही गमन किया है। जैसा उन्होंने मुझे कहा था वैसा ही कार्य मैंने किया है।'' इस प्रकार श्री यतिराज के द्वारा कहे गये वचनों से शिष्य समुदाय को समुचित उत्तर नहीं मिला। तब उन्होंने यही प्रश्न श्री महापूर्णाचार्य स्वामीजी से पूछा। जिसके उत्तर में स्वामीजी ने बताया कि- ''यतिराज श्री रामानुजाचार्य मुझे मेरे आचार्य स्वामी श्री यामुनाचार्य जी के सदृश्य लगते हैं। इस कारण से मैंने उन्हें प्रणाम किया। मेरे परमाराध्य गुरुदेव श्री यामुनाचार्य स्वामी के बाद आचार्योपयुक्त सारी विभूतियाँ और समस्त शास्त्रार्थ वैभव इनमें ही दिखलाई पड़ रहा है इसलिये इनसे गुरु-शिष्य सम्बन्ध रहते हुये भी मैंने आचार्य भावना से अपने शिष्य श्री यतिराज को प्रणाम किया है।''

इसके आगे उन्होंने बताया कि- ''जब श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामीजी ने यतिराज को मन्त्रार्थ प्रदान किया, तब उन्होंने बड़े आग्रह के साथ बारम्बार उनसे कहा था यह मन्त्र परम दुर्लभ है, इसलिये इसकी गोपनीयता की सावधानी पूर्वक रक्षा की जाये।'' यतिराज ने गुरुदेव की बातों को कुछ भी महत्व न देकर तत्काल मठ से बाहर आते ही गोपुर पर चढ़कर वह मन्त्र बड़े उच्च स्वर से बोलकर सबको सुना दिया। बारम्बार मन्त्र को गुप्त रखने के आदेश के बावजूद उसी समय में अपने सामने ही इस प्रकार सार्वजनिक रूप से आज्ञा का उल्लंघन होता हुआ देखकर श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामीजी अत्यन्त क्रोधित हुये और उन्होंने तत्काल ही श्री यतिराज को अपने पास बुलाया। विनीत शिष्य श्री रामानुज को अपने सामने खड़ा देखकर उन्होंने डाँठते हुये कहा कि- ''जानते हो इस गुरुद्रोह नामक महापातक का क्या फल मिलेगा?'' गुरुदेव के वचनों को सुनकर यतिराज ने बताया कि- ''गुरुदेव की अवज्ञा का फल तो शास्त्रों में नरक की प्राप्ति लिखा है।'' यह सुनते ही श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य बोले कि- ''यह सब जानते हुये भी तुमने यह दुस्साहसपूर्ण कार्य क्यों किया। अब तो इसका फल नरक प्राप्ति भी तुम्हें स्वीकार करनी ही पड़ेगी।'' गुरुदेव के वचनों को सुनकर यतिराज ने कहा कि- ''भगवान! इस महान पातक के मैं नरक में जाने के लिये सहर्ष तैयार हूँ क्योंकि इस महामन्त्र के श्रवण करने से जो हजारों लोगों को परमपद मिलेगा और इसके बदले में मुझ एक को नरक में जाने की कोई चिन्ता नहीं है।'' यतिराज की इस अद्भुत परोपकार निष्ठा को देखकर गुरुदेव को अत्यन्त ही आश्चर्य हुआ और वे विचार करने लगे कि जिस मन्त्र को एक बार सुनते ही इसके अन्दर परोपकार की ऐसी महान भावना उत्पन्न हो गयी और इस मन्त्र का मैं वर्षों से ज्ञाता होते हुये भी ऐसा परोपकार नहीं कर सका। फिर यह पुरुष तो निश्चय ही भगवान के वैकुण्ठ लोक से संसार के रक्षा के लिये अवतरित कोई महापुरुष है। यह सोचकर ही उन्होंने यतिराज श्री रामानुजाचार्य को ''मन्नाथ'' मेरे स्वामी! इस नाम से सम्बोधन करके सप्रेम अपने हृदय से लगा लिया। तत्पश्चात् वहाँ पर उपस्थित सभी श्रीवैष्णवों से कहा कि- ''आज इस श्रीवैष्णव विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त को आप श्री रामानुज सिद्धान्त के नाम से प्रसिद्ध करें।'' इसके बाद श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामीजी

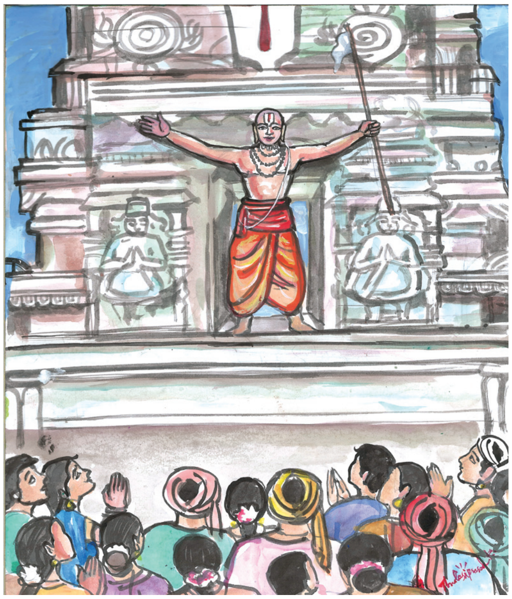

ने अपने सुपुत्र श्री सैम्यनारायण को यतिराज श्री रामानुजाचार्य का शिष्य बनाकर अपना अहोभाग्य माना।

एक समय श्री यतिराज श्री मालाधराचार्य स्वामीजी से सहस्रगीति का व्याख्यान श्रवण कर रहे थे। श्री मालाधराचार्यजी के मुख से एक गाथा का अर्थ सुनकर आपने कहा कि- इस गाथा का अर्थ यह नहीं दूसरा है। यह कहकर आपने दूसरा अर्थ किया। यह अर्थ सुनते श्री मालाधराचार्यजी कुपित हो गये और उन्होंने कहा कि यह आप विश्वामित्र की सृष्टि के समान अपने मन से ही अर्थ कर रहे है जो ठीक नहीं है। बाद में मालाधराचार्य पुस्तक बन्द करके अपने घर को यह कहते हुये चले गये कि अब भविष्य में स्वयमेव ही पढ़ लेना, मेरे पढ़ लेना मेरे पढाने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं। यह समाचार जब श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामीजी ने सुना तो वे तत्काल श्रीरंगम् आये और श्री मालाधराचार्य स्वामीजी को प्रेमपूर्वक समझाते हुये कहा कि- ''जैसे सांदीपनी गुरु के शिष्य भगवान श्रीकृष्ण चौंसठ कलाओं में प्रवीण थे। वैसे ही श्री रामानुजाचार्य को भी समझे।'' इसके उत्तर में जब श्री मालाधराचार्य स्वामी ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य के द्वारा किया गये सहस्रगीति के विशेषार्थ का वर्णन किया तो श्री गोष्ठीपूर्णाचार्य स्वामी ने कहा कि- ''श्री रामानुज ने जैसा अर्थ किया है, वैसा ही अर्थ पूर्व काल में श्री यामुनाचार्य स्वामी ने भी कहा था। आप ने श्री यामुनाचार्य स्वामी जी द्वारा कहे गये अर्थ से अन्य अर्थ किया। इसलिये रामानुज ने उस पूर्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।'' इसके पश्चात् श्री मालाधराचार्य स्वामी यतिराज के ऊपर प्रसन्न हो गये एवं उनको पूर्ववत् सहस्रगीति का उपदेश सुनाने लगे।

एक दिन किसी गाथा के अर्थ पर गुरु-शिष्य में मतभेद हो गया। तब यतिराज ने कहा कि- ''हे गुरुदेव! श्री यामुनाचार्य जी ने इसका जो अर्थ किया हैं वह आप जो कह रहे हैं, वैसा नहीं है।'' यह सुनते ही श्री मालाधराचार्य जी ने उनसे कहा कि- ''जब आपने श्री यामुनाचार्य स्वामीजी को देखा भी नहीं है, तो ऐसी बाते क्यों कह रहे हैं, जैसे वर्षों उनके सम्पर्क में रहे हों।'' इसके प्रत्युत्तर में यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने कहा कि- जिस प्रकार द्रोणाचार्य का एकलव्य नामक एक भील युवक शिष्य था उसी प्रकार मुझे आप श्री यामुनाचार्य स्वामी का एकनिष्ठ शिष्य समझिये।'' मालाधराचार्य स्वामी ने इनकी आलौकिक प्रतिभा से प्रभावित होकर इनको भगवान श्रीमन्नारायण अंशविशिष्ट मानकर अपना विवाद समाप्त किया एवं अपने सुपुत्र सुन्दर बाहु को यतिराज का शिष्य बनाकर अपने को कृतार्थ माना। यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने चरम श्लोक के तात्विक साम्प्रदायिक अर्थ प्राप्ति की इच्छा से श्री यामुनाचार्य के सुपुत्र स्वामी श्री वररंगाचार्य जी की छः मास निरन्तर सेवा की उनकी सेवा से प्रसन्न होकर एक दिन स्वामी श्री वररंगाचार्य जी उनसे बोलो कि- ''आपने छः महिने तक निष्ठा के साथ जो सेवा की है, उसके उपलक्ष्य में मैं आपको चरम श्लोकार्थ कहता हूँ, श्रवण कीजिये।'' यह कहकर उन्होंने अत्यन्त गोपनीय चरम श्लोकार्थ यतिराज श्री रामानुजाचार्य प्रसन्नतापूर्वक प्रदान किया। वे स्वयं संतानहीन थे, इसलिये अपने लघु भ्राता महान तेजस्वी श्री शैलपूर्ण को उनका शिष्य बनाकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

इस प्रकार से उस समय में जितने भी तत्वार्थ को जानने वाले महापुरुष और विद्वान थे, उन सभी ने यतिराज श्री रामानुजाचार्य को लोकरक्षा के लिये ही अवतरित जानकर उनको आचार्य मानते हुये उनके वैभव की वृद्धि की।

।। श्री प्रपन्नामृत का 60वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

जनवरी 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

देवुनि कड़पा, उभयदेवेरियों सहित श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वरस्वामीजी

फरवरी 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

मार्च 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

जनवरी 2026

01. नूतन अंग्रेजी वर्ष
07-13. श्री आंडाल नीराट्टोत्सव
14. भोगी
15. मकर संक्रांति
16. कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
19-27. देवुनि कड़पा श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
23. वसंतपंचमी
25. रथसप्तमी
26. भारत गणतंत्र दिवस
26 से फरवरी 01 तक तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का प्लवोत्सव
29. भीष्म एकादशी

फरवरी 2026

01. श्री रामकृष्ण तीर्थ मुक्कोटी
08 से 16 तक श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
08 से 17 तक तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
15. महाशिवरात्रि
24 से मार्च 04 तक तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
26 से मार्च 02 तक तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव

मार्च 2026

03. श्री लक्ष्मीजयंती, होली, श्री कुमारधारा तीर्थ मुक्कोटी
15. अन्नमय्या वर्धंति
17 से 25 तक तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
19. 'श्री पराभव' नामक तेलुगु नूतन वर्ष 'उगादि'
21. मत्स्य जयंती
24 से अप्रैल 01 तक वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
26 से अप्रैल 03 तक ओंटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
27. श्रीरामनवमी
30 से अप्रैल 01 तक तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

नागुलापुरम्, उभयदेवेरियों सहित श्री वेदनारायणस्वामीजी

अप्रैल 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

मई 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जून 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

अप्रैल 2026

01. तुंबुरुतीर्थ मुक्कोटी
14. तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
20. परशुराम जयंती, अक्षयतृतीया
21. श्री शंकर जयंती
22. श्री रामानुज जयंती
23. श्रीराम जयंती

25 से 27 तक तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव

28 से मई 01 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव

30. श्री नरसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती

मई 2026

01 से 09 तक नागुलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

01. श्री कूर्म जयंती
02. श्री अन्नमय्या जयंती

07 से 09 तक श्रीनिवासमंगापुरम्, श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का वसंतोत्सव

12. श्री हनुमज्जयंती, तिरुपति गंगजातरा (मेला)

22 से 31 तक तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

28 से जून 05 तक ऋषिकेश, नारायणवनम् में श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी जी का ब्रह्मोत्सव

जून 2026

02. श्री यमुना नदी का पुष्कर प्रारंभ

06 से 14 तक कार्वेटिनगरम् श्री वेणुगोपालस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

25 से 29 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव

25 से जुलाई 03 तक अप्पलायगुंटा श्री प्रसन्न वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

26 से 28 तक तिरुमल श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

जुलाई 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

तिरुमल, उभयदेवेरियों सहित श्री मलयप्पस्वामीजी

अगस्त 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

सितंबर 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

जुलाई 2026

05 से 07 तक तिरुचानूर
श्री सुंदरराजस्वामीजी का अवतारोत्सव
16. पूरी जगन्नाथ रथयात्रा
17. तिरुमल श्री बालाजी का आणिवर आस्थान
17 से 19 तक श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का
साक्षात्कार वैभवोत्सव
25. तोलि (पहला) एकादशी,
चातुर्मास्य व्रत आरंभ
26. तिरुमल, नारायणगिरि में छत्रस्थापन,
तुलसीमाहात्म्य
29. गुरुपूर्णिमा - व्यासपूर्णिमा

अगस्त 2026

07. आडिकृत्तिका
15. भारत स्वतंत्रता दिवस
16. नागचतुर्थी
17. गरुड़ पंचमी
21. श्री वरलक्ष्मीव्रत,
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा वर्धंति
22 से 25 तक तिरुमल
श्री बालाजी का पवित्रोत्सव
28. श्री विखनस महामुनि जयंती, राखी पूर्णिमा,
श्री हयग्रीव जयंती
29. गायत्रीजप

सितंबर 2026

04. श्रीकृष्णाष्टमी, गोकुलाष्टमी
13. श्री बलराम जयंती, श्री वराह जयंती
14. श्री गणेश चतुर्थी
14 से 23 तक तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
19. तिरुमल श्री बालाजी का गरुड़सेवा
23. श्री वामन जयंती
23 से 26 तक तिरुचानूर
श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव
25. श्री अनंतपद्मनाभव्रत
27. महालय पक्ष प्रारंभ

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी

अक्तूबर 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

नवंबर 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

दिसंबर 2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अक्तूबर 2026

02. गांधी जयंती
10. महालय अमावास्या
11 से 20 तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
11 से 20 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का नवरात्रि उत्सव
16. तिरुमल श्री बालाजी का गरुड़वाहन सेवा
17. सरस्वतीपूजा
19. दुर्गाष्टमी
20. विजयदशमी

नवंबर 2026

08. नरक चतुर्दशी, दीपावली
09. श्री केदारगौरीव्रत
13. नागुलचविति
14. बाल दिवस
16. तिरुमल श्री बालाजी का पुष्पयाग
21. कैशिकद्वादशी, श्रीचक्रतीर्थ मुक्कोटी
24. कार्तिक पूर्णिमा, कृत्तिका दीपोत्सव श्री कपिलतीर्थ मुक्कोटी

दिसंबर 2026

06. श्री धन्वन्तरी जयंती
06 से 14 तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
09. तिरुमल श्री बालाजी के उपस्थिति में अध्ययनोत्सव आरंभ
10. तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का गजवाहन सेवा
14. पंचमीतीर्थ
15. सुब्रह्मण्य षष्ठी
16. धनुर्मास आरंभ
20. वैकुंठएकादशी, श्री गीताजयंती
21. श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थ मुक्कोटी
23. श्री दत्तजयंती
25. तिरुमल श्रीहरि के उपस्थिति में संपन्न प्रणयकलह महोत्सव

रथसप्तमी, जिसे माघ सप्तमी, आरोग्य सप्तमी या अचला सप्तमी भी कहा जाता है, **एक हिंदू त्योहार है जो हिंदू कैलेंडर के अनुसार माघ महीने के शुक्ल पक्ष की सातवीं तिथि को मनाया जाता है।** यह सूर्य देव के जन्म और उनके रथ के उत्तरी गोलार्ध की ओर घूमने का प्रतीक है, जो वसंत और नई कटाई की शुरुआत का भी प्रतीक है। इस दिन, सूर्य देव की पूजा की जाती है।

मुख्य बातें

प्रतीकात्मक अर्थ : यह दिन सूर्य देव के जन्मदिवस (सूर्य जयंती) के रूप में मनाया जाता है और वसंत के मौसम की शुरुआत का प्रतीक है, जिससे यह किसानों के लिए नए साल की शुभ शुरुआत मानी जाती है।

तिथि : हिंदू माह माघ के शुक्ल पक्ष की सातवीं तिथि को यह त्योहार मनाया जाता है।

अन्य नाम : इसे माघ सप्तमी, आरोग्य सप्तमी, सूर्य जयंती और अचला सप्तमी के नाम से भी जाना जाता है।

पौराणिक कथा : पौराणिक कथाओं के अनुसार, सांब को ऋषि दुर्वासा के श्राप से मुक्ति पाने के लिए सूर्य देव की पूजा और रथसप्तमी का व्रत करने की सलाह दी गई थी, जिससे उन्हें कुष्ठ रोग से मुक्ति मिली।

पूजा विधि : इस दिन सूर्य देव को अर्घ्य दिया जाता है, शुद्ध घी का दीपक जलाया जाता है और कपूर, धूप व फूलों से पूजा की जाती है। कुछ भक्त एक बार ही भोजन करते हैं और नमक का प्रयोग नहीं करते हैं।

सांस्कृतिक महत्व : यह त्योहार भारत भर में सूर्य को समर्पित मंदिरों में और घरों में मनाया जाता है। इस दिन, भक्त त्वचा रोग से मुक्ति के लिए भी सूर्य देव की पूजा करते हैं।

- श्रीमती प्रीति ज्योतीन्द्र अजवालिया

रथसप्तमी की मुख्य पौराणिक कथाएँ हैं :

भगवान कृष्ण के पुत्र शाम्ब का ऋषि दुर्वासा द्वारा श्राप से पीड़ित होना और सूर्योपासना से ठीक होना, और सूर्य देव का जन्म से जुड़ी कथा। शाम्ब को उनके शारीरिक बल पर घमंड था और जब उन्होंने तपस्या के बाद दुर्बल दिख रहे ऋषि दुर्वासा का अपहास किया, तो उन्हें कुष्ठ रोग का श्राप मिला। पिता के कहने पर, शाम्ब ने सूर्य देव की पूजा की, जिससे वह रोगमुक्त हो गए। एक अन्य कथा के अनुसार, रथसप्तमी को सूर्य देव का जन्म हुआ था, और यह दिन सूर्य जयंती के रूप में मनाया जाता है।

भगवान शाम्ब की कथा

श्राप और रोग : भगवान कृष्ण के पुत्र शाम्ब को अपनी शारीरिक सुंदरता और शक्ति पर बहुत अहंकार था। एक बार जब ऋषि दुर्वासा बहुत तपस्या के बाद दुर्बल अवस्था में उनसे मिलने आए, तो शाम्ब उनकी हंसी उड़ाते हुए उनका अपमान कर बैठे। क्रोधित ऋषि दुर्वासा ने उन्हें कुष्ठ रोग का श्राप दे दिया।

सूर्य की उपासना : जब शाम्ब की यह स्थिति हुई और कोई इलाज काम नहीं आया, तो भगवान कृष्ण ने उन्हें सूर्य देव की आराधना करने की सलाह दी।

रोगमुक्ति : पिता के कहने पर शाम्ब ने सूर्योपासना शुरू की। उनकी भक्ति और पूजा से प्रसन्न होकर सूर्य देव ने उन्हें कुष्ठ रोग से मुक्ति प्रदान की।

सूर्य देव के जन्म की कथा

सूर्य जयंती : एक अन्य कथा के अनुसार, रथसप्तमी को ऋषि कश्यप और उनकी पत्नी अदिति के घर भगवान सूर्य का जन्म हुआ था।

सूर्य का आविर्भाव : भविष्य पुराण के अनुसार, इस तिथि को ही भगवान सूर्य का आविर्भाव हुआ था, और उन्हें अपनी पत्नी संज्ञा और संतानें भी इसी दिन प्राप्त हुई थीं। इसलिए यह दिन सूर्य जयंती के रूप में मनाया जाता है।

अन्य कथा

राजा यशोवर्मा की कथा : कम्बोज साम्राज्य के राजा यशोवर्मा को कोई उत्तराधिकारी नहीं था। जब उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई, तो वह बीमार था। एक संत ने सलाह दी कि पुत्र को अपने पिछले पापों से मुक्ति के लिए रथसप्तमी का व्रत करना चाहिए। ऐसा करने पर उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। रथसप्तमी के दिन सूर्य देव की उपासना करके उसे प्रसन्न करके हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण कर सकते हैं।

रथसप्तमी पूजा विधि

स्नान : सूर्योदय से पहले उठकर पवित्र नदी या घर पर तिल, कच्चे दूध और गंगाजल मिले जल से स्नान करें। इसके बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

1. **अर्घ्य :** तांबे के लोटे में जल, लाल फूल, गुड़ और अक्षत लेकर सूर्य देव को अर्घ्य दें। अर्घ्य देते समय जल की धारा में सूर्य का दर्शन करें।

2. **मंत्र जाप :** अर्घ्य देते समय ॐ घृणिः सूर्याय नमः मंत्र का जाप करें।

3. **दीपक और धूप :** सूर्य देव के सामने घी का दीपक जलाएँ और धूप दिखाएँ।

4. **परिक्रमा :** सूर्य देव की तीन बार परिक्रमा करें।

5. **भोग :** सूर्य देव को गुड़, तिल, रोटी और वस्त्र का भोग लगाएँ। पूजा के अंत में आरती करें और प्रसाद वितरित करें।

6. **दान :** इस दिन दान-पुण्य करना विशेष फलदायी होता है, खासकर गुड़, तिल, रोटी और वस्त्र का दान शुभ माना जाता है।

7. **रंगोली (वैकल्पिक) :** सात घोड़ों वाले सूर्य रथ की रंगोली बना सकते हैं।

रथसप्तमी के पर्व पर सूर्य देव को प्रसन्न करने और शुभ फल प्राप्त करने के लिए कई मंत्रों का जाप कर सकते हैं, जिनमें - ''ॐ घृणि सूर्याय नमः'', ''ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो

सूर्यः प्रचोदयात्'', और ''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः'' शामिल हैं।

रथसप्तमी पर जाप करने के लिए मंत्र

ॐ घृणि सूर्याय नमः : यह सूर्य देव का एक सरल और प्रभावी मंत्र है, जो आत्म बल और मानसिक शांति प्रदान करता है।

ॐ आदित्याय विद्महे दिवाकराय धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् : यह एक सूर्य गायत्री मंत्र है जो सूर्य देव की कृपा पाने के लिए उपयोगी है।

ॐ सप्ततुरंगाय विद्महे सहस्त्रकिरणाय धीमहि तन्नो रविः प्रचोदयात् : यह मंत्र सूर्य के सात घोड़ों और हजारों किरणों का स्मरण करता है।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः : इस मंत्र का जाप करने से समृद्धि, स्वास्थ्य और सम्मान में वृद्धि होती है।

ॐ आदित्याय नमः : यह सूर्य देव के नामों में से एक है, जिसका जाप करना भी लाभकारी होता है।

मंत्र जाप का महत्व

सूर्य देव की कृपा : इन मंत्रों का जाप करने से सूर्य देव प्रसन्न होते हैं और उनकी कृपा प्राप्त होती है।

धन और समृद्धि : सूर्य मंत्रों के जाप से धन और समृद्धि में वृद्धि होती है, जो व्यापारियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है।

स्वास्थ्य और ऊर्जा : इन मंत्रों के जाप से शारीरिक ऊर्जा बढ़ती है और शारीरिक बीमारियाँ दूर होती हैं।

मानसिक शांति : 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' जैसे मंत्र आत्मबल और मानसिक शांति प्रदान करते हैं।

आप मंत्रों के साथ-साथ 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ भी कर सकते हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक-लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले कृपया लेखक-लेखिकाओं निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

1. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, देव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।
2. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।
3. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।
4. रचना के साथ लेखक ध्रुवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में प्रकाशित नहीं है।'
5. रचनाओं को प्रकाशन करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक का कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।
6. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक पास बुक का प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ संलग्न करके भेजना अनिवार्य है।
7. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं को निम्न पते पर भेज दें। पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र).

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

85. तिरुवण्डूर (तिरुवमुणडूर)

यह दिव्य क्षेत्र चेंकनूर से 6 कि.मी. पर है। स्थानीय बस से जा सकते हैं।

मूलमूर्ति - पाम्पणैयप्पन्, कमलनाथन, पश्चिमाभिमुखी। खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - कमलवल्लि नाच्चियार।

तीर्थ - पापनाश तीर्थः, पम्पा तीर्थ।

विमान - वेदालय विमान।

प्रत्यक्ष - मारकण्डेय, नारद।

विशेष - यहाँ के इस मंदिर को नकुल ने जीर्णोद्धार किया। इसलिए नकुल प्रतिष्ठा कहा जाता है। यहाँ भूमि को खोदते वक्त नए विग्रह प्राप्त हुए। जो मण्डप सहित नई सन्निधियाँ निर्माण कर वहाँ प्रतिष्ठित किए गए। नारद ने यहाँ से भगवान के दर्शन कर नारदीय पुराण की रचना की और निर्माण किया कि श्री महाविष्णु ही परतत्व है। उनकी पूजा विधान और स्तुतियाँ प्रार्थना गीत बनाई।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

86. तिरु अनन्तपुरम

चेन्नै-तिरु अनन्त पुरम रेल मार्ग में तिरु अनन्तपुरम स्टेशन (बड़ा जंगशन) है। मंदिर रेलवे स्टेशन से एक कि.मी. पर है। सभी स्थानों से बस की सुविधा है। केरल राज्य की यह राजधानी है।

मूलमूर्ति - अनन्त पद्मनाभन। भुजंगशयन (अनन्त शयन) - पूर्वाभिमुखी दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - श्रीहरि लक्ष्मी।

तीर्थ - मत्स्य तीर्थ, पद्म तीर्थ, वराह तीर्थ।

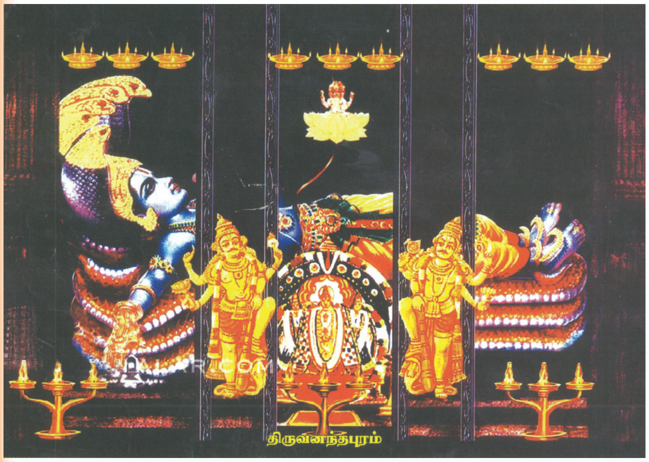

विमान - हेमकूट विमान।

प्रत्यक्ष - इन्द्र, चन्द्र एकादश रुद्र।

यह बडा मंदिर है। यहाँ अनन्त पद्मनाभन, अनन्त शयन की बृहदाकार मूर्ति गर्भगृह में विराजमान है। गर्भगृह के लिए तीन प्रवेश द्वार हैं। मुख मण्डल नाभि (ब्रह्म) शिर चरण आदि को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्रवेश द्वार से दर्शन करते हैं। दक्षिण प्राकार में योग नरसिंहन सन्निधि है। सन्निधि के आगे हनुमान दर्शन देते हैं। गर्भ-गृह के पीछे कृष्ण की सन्निधि है।

यहाँ हनुमान पर मक्खन चढाते हैं। यह ऐतीह्य है कि कई दिनों तक यह गलता नहीं - खराब भी नहीं होता। मंदिर के बाजू में लक्ष्मीवराह मंदिर एवं भगवान

श्रीनिवास के मंदिर है। श्री स्वामी दर्शन ने यहाँ मंगलाशासन किया है।

यह ऐतीह्य है कि दिवाकर योगी नामक एक योगी अपनी सभी कामनाएँ छोडकर क्षीराब्धिनाथ के दर्शन कर मुक्ति प्राप्त करने हमेशा हरि पूजा में लगे रहते थे। भगवान ने उनको दर्शन देकर अनुग्रह किया। योगी की प्रार्थना के अनुसार बृहत रूप लेकर, तिरुमुख मण्डल नाभि, चरण आदि तीनों को अलग-अलग प्रवेश द्वार द्वारा दर्शन करने के रूप में दर्शन देते विराजमान हुए हैं। यहाँ अनन्तशयन व्रत का महत्व है।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

87. तिरुवाट्टारु

तिरुवनन्तपुरम से नागर कोयिल जाने वाले मार्ग में तोडुवट्टि नामक स्थान / गाँव पहुँचना है। वहाँ उतरकर दूसरे बस से तिरुवाट्टारु (लगभग 10 कि.मी.) जाना है। आज कल लगभग 30 कि.मी.। आजकल रेल की सुविधा भी है। तिरुवनन्तपुरम कन्याकुमारी रेल मार्ग में भी जा सकते हैं।

मूलमूर्ति - आदि-केशवपेरुमाल, भुजंग शयन, पश्चिमाभिमुखी दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मरकतवल्लि नाच्चियार।

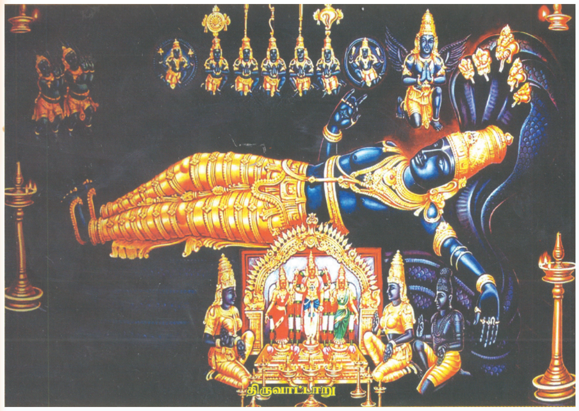

तीर्थ - कडलवाय् तीर्थः, वाट्टारु, रामतीर्थः।

विमान - अष्टांग विमान (अष्ठाक्षर विमान)।

प्रत्यक्ष - परशुराम, चन्द्र।

विशेष - यह मंदिर तिरु अनन्तपुर मंदिर सदृश निर्मित है। यहाँ के गर्भगृह के भी तीन प्रवेश द्वार हैं। तीन प्रवेश द्वार क्रमशः शिर, नाभि, चरण के दर्शन करते हैं।

कृष्णन सन्निधि में श्रीकृष्ण भगवान विराजमान हैं। प्राकार बड़े हैं। मंदिर का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि शाम को मूलमूर्ति के तिरुमुख मण्डल में सूर्य किरणें पडें। यहाँ भगवान ने देवताओं की प्रार्थना के अनुसार केसि नामक असुर का संहार किया जो सब को परेशान करता था। इसलिए आदिकेसर नाम भी है।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 11 दिव्य पद।

88. तिरुवण परिशारम (तिरुपति सारम)

यह दिव्य क्षेत्र नागरकोविल से 4 कि.मी. दूरी पर है। बस की सुविधा है।

मूलमूर्ति - तिरुकुरळप्पन, तिरुवाळमारप्पन। पूर्वाभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - कमलवल्लि नाच्चियार।

तीर्थ - लक्ष्मी तीर्थ।

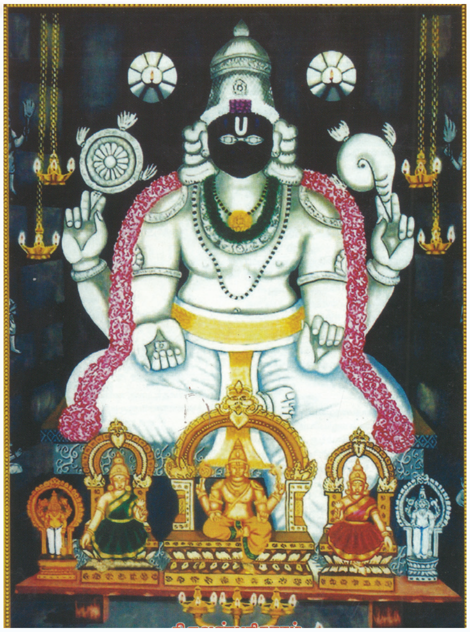

विमान - इन्द्रकल्याण विमान।

प्रत्यक्ष - विन्दै, कारि, उडैयनंगै, गरुड़।

विशेष - नम्माल्वार की माता उडैयनंगै का जन्म स्थल है। श्रीमाली मंदिर के है। यहाँ घुटने पर चलते हुए बालक नम्माल्वार की एक मूर्ति दर्शनीय है। आजकल यहाँ एक भजन मण्डप भी स्थापित है।

यह ऐतीह्य है कि 'श्रीयःपति' के संचरण से 'तिरुपति सारम' - और भगवान के वक्षःस्थल में लक्ष्मी (तिरु) के नित्यवास से तिरुवाळमारप्पन है। विष्णुभक्त उडैयनंगै का तिरुक्कुरुहूर में कारि नामक एक विष्णु भक्त से विवाह हुआ। उडैयनंगै ने 41 दिन व्रत का अनुष्ठान किया। व्रत के बाद उडैयनंगै गर्भवती हुई - समय पर शठकोप (नम्माल्वार) का जन्म हुआ।(इस संबन्ध में पूरा विवरण दिव्य क्षेत्र 98 में देखने की कृपा करें) यह भी कहा जाता है कि हनुमान की प्रार्थना के अनुसार यहाँ अगस्त्य ने रामायण की रचना की। कुलशेखर महाराज ने गोपुर, मण्डप, प्राकार आदि का निर्माण किया था। विभिन्न वाहन बनवाकर उत्सव आदि मनाने का प्रबन्ध किया।

मंगलाशासन - एक आल्वार, एक दिव्य पद।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

इडुमे यिनिय सुवर्गत्तिल्, इन्नुम् नरकिलिट्टु
चुडुमे अवट्रै त्तौडर्तरु तोल्लै, शुळल् पिरप्पिल्
नडुमे यिनि नम्मिरामानुजन् नम्मै नम्वशत्ते
विडुमे शरणम् एंड्राल् मनमे नैयल् मेवुदर्क्के ॥९८॥

भगवान् रामानुज एवं शरणमित्यनुसन्धाने कृते सोऽयमाचार्यसार्वभौमो नास्मान्, क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्तीति दूष्यमाणं स्वर्गलोकं प्रापयेत्; नापि नरके निपात्य दाहयेत्; स्वर्गनरकसमयोगक्षेमसंसारभूमावपि नावस्थापयेत्, नापि सहेतास्माकं स्वातन्त्र्यगन्धमपि। अतश्च हे हृदय! स्वरूपानुरूपफलप्राप्तौ निर्विचारं वर्तस्व॥

हमारे यह अनुसंधान करने के बाद, कि ''श्री रामानुज स्वामीजी ही हमारे लिए गति हैं'', क्या वे हमें (अत्यल्प व नश्वर) सुखदायक स्वर्ग भेजेंगे? अथवा नरक भेज कर दु:ख भुगावेंगे? अथवा उन स्वर्गनरकों के संबंधित अनादि जन्मचक्र में फसावेंगे? अथवा अपने रास्ते पर छोडकर उपेक्षा कर देंगे? कुछ नहीं। अत: हे मन। तुम अपने स्वरूपानुरूप पुरुषार्थ पाने के विषय में चिंता मत करो। (श्री रामानुज स्वामीजी की शरण में जाने मात्र से वे हमें स्वर्ग नरक व संसार रूप दुर्गति पाने से रोककर स्वरूपानुरूप सद्गति पहुँचा देंगे। अत: इस विषय में हमें चिंता करने की आवश्यकता नहीं रहती।)

क्रमश:

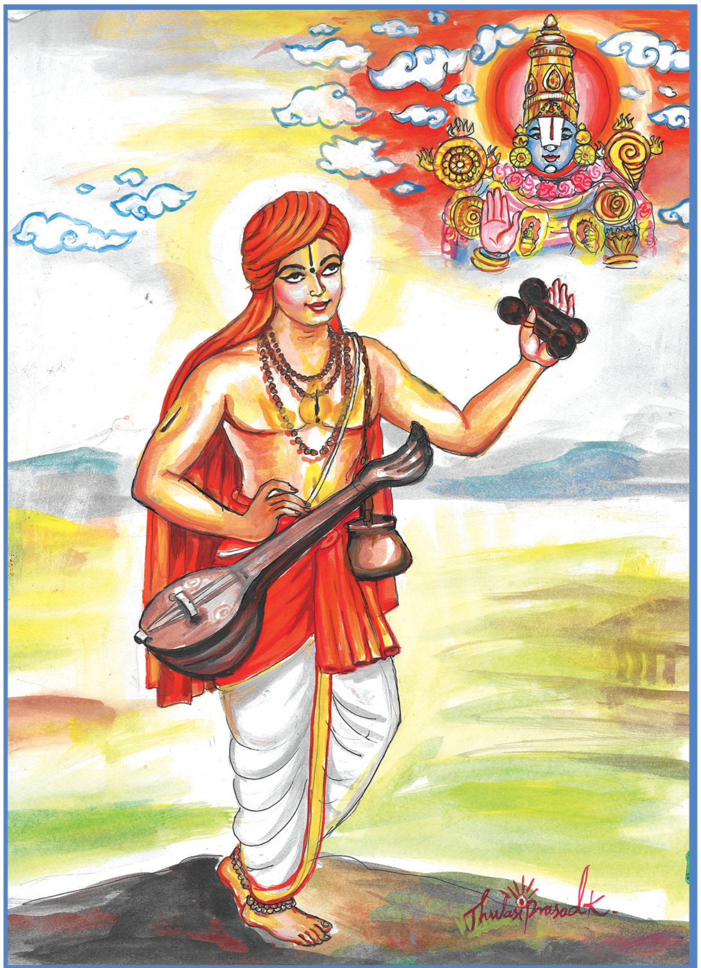

कर्नाटक संगीत के पितामह पुरंदर दास

- डॉ.टी.लतामंगेश

पुरंदर दास कर्नाटक संगीत के पितामह माने जाते हैं और वे भक्ति आंदोलन के प्रमुख हरिदास संत, कवि और संगीतकार थे। उनका जीवन सांसारिक वैभव से त्याग और ईश्वर भक्ति की ओर अद्भुत परिवर्तन की प्रेरणादायक कहानी है। पुरंदर दास का जन्म लगभग 1470 ई. के आस-पास वर्तमान महाराष्ट्र के पुणे के पास पुरंदरगढ़ क्षेत्र में एक समृद्ध व्यापारी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम वरदप्पा नायक और माता का नाम रुक्मिणी बताया जाता है, और जन्म के समय उनका नाम श्रीनिवास नायक रखा गया। वे बचपन से ही कन्नड़, संस्कृत और धार्मिक संगीत में निपुण थे और कम उम्र में ही सरस्वती बाई से उनका विवाह हो गया। अवस्था में वे हीरे-जवाहरात, सोना-चांदी आदि के धनी और अत्यंत कंजूस व्यापारी थे, जो दान-पुण्य से दूर रहते थे। लोककथाओं के अनुसार एक निर्धन ब्राह्मण की मदद से जुड़े प्रसंग और भगवान विष्णु/विट्ठल की लीला के कारण उनके मन में गहरा परिवर्तन आया, जिसके बाद उन्होंने अपनी सारी संपत्ति दान कर दी। बाद में वे महान संत व्यासतीर्थ के शिष्य बने, दीक्षा के बाद उन्हें ''पुरंदर दास'' नाम मिला और उन्होंने शेष जीवन हरि भक्ति और भजन-कीर्तन के लिए समर्पित कर दिया।

पुरंदर दास मध्वाचार्य के द्वैत वेदांत दर्शन के अनुयायी थे और वे भगवान विष्णु, विशेष रूप से विट्ठल के अनन्य भक्त माने जाते हैं। उन्होंने सरल कन्नड़ भाषा में हज़ारों भक्ति पद, कीर्तन और दास साहित्य की रचना की, जिनमें ईश्वर भक्ति के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों, जाति-पांति और पाखंड पर भी प्रहार मिलता है। परंपरा में उन्हें नारद मुनि का अवतार माना जाता है, और उनके पद आज भी दक्षिण भारत की भक्ति परंपरा और कर्नाटक संगीत में गाए जाते हैं। कर्नाटक संगीत की व्यवस्थित शिक्षा-पद्धति के निर्माण का श्रेय मुख्य रूप से पुरंदर दास को दिया जाता है।

पुरंदर दास के द्वारा प्रयुक्त राग और ताल कर्नाटक संगीत की प्राचीन और पारंपरिक संरचनाओं के अनुरूप थे। वे मुख्य रूप से कर्नाटक संगीत के मूल स्वर रूपों और तालों के प्रयोगकर्ता थे, विशेषकर मयमालवगौला राग (मलावागोला) का प्रयोग उन्होंने शिक्षा का आधार बनाया था, जो आज भी कर्नाटक संगीत की शिक्षा में प्रारंभिक राग माना जाता है। उनके उपयोग किए गए राग सरल और स्वाभाविक स्वर क्रमों वाले थे,

जिनमें सात स्वरों का आरोह-अवरोह प्रमुख था, जिससे संगीत सीखने में आसानी होती थी। इसके अलावा, उन्होंने रागों को स्वर और भाव के आधार पर शीघ्र समझने और गाने के लिए कई पद, कीर्तन, अलंकार विकसित किए। ताल के मामले में, पुरंदर दास ने सुलादी सप्तताल प्रणाली की रचना की जिसमें सात ताल होते हैं, जो कर्नाटक संगीत के विभिन्न ताल-बद्ध गीतों को प्रस्तुत करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। ये ताल प्रमुख रूप से सरल से लेकर जटिल स्वरूप के थे, जिनके ताल के संयोजन से लयबद्धता का आधार बनता है। मुख्य तालों में तिनताल, अट्टताल, रूपकताल जैसे स्वरूप शामिल थे। इस प्रकार, उनके राग और ताल शिक्षा को सरल, व्यवस्थित और सुसंगठित करने वाले थे, जो विद्यार्थियों के लिए कर्नाटक संगीत के गहरे और जटिल ज्ञान तक पहुँचने का माध्यम बने। उनके द्वारा स्थापित स्वर और ताल संरचना आज भी कर्नाटक संगीत की शिक्षा व प्रस्तुति की रीढ़ हैं।

पुरंदर दास का कर्नाटक संगीत पर अत्यंत महत्वपूर्ण और स्थायी प्रभाव था। वे कर्नाटक संगीत के शिक्षक, संरचित प्रणालिका के निर्माता और महान रचनाकार थे, जिन्हें ''कर्नाटक संगीत के पितामह'' कहा जाता है। उन्होंने संगीत के शिक्षा के लिए मलावागोला पैमाना (राग मयमालवगौला) को बुनियादी स्वरूप के रूप में लागू किया, जो आज भी कर्नाटक संगीत के शिक्षण में आधार के रूप में उपयोग होता है। पुरंदर दास ने स्वरावली, सुलादी सप्त ताल, अलंकार, गीतम जैसी श्रेणीबद्ध अभ्यास-पाठ तैयार किए जिससे संगीत सीखने वालों को स्वर और ताल की समझ में मदद मिली। वे ताना वर्णम, तिल्लाना, सुलादी, कीर्तन जैसे संगीत संरचनात्मक शैलियों के भी रचयिता थे। इनके कीर्तन और पद दशर पद या देवर्नम के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने गीतम के जरिए राग की विशेषताओं का वर्णन किया और सुलादी जैसे उच्च स्तर के तालमालिका बनाए, जो भक्ति विषयक होते हैं। इन रचनाओं ने संगीत की शिक्षा और प्रस्तुति दोनों को सरल और सुसंगठित बनाया। उनके पद कर्नाटक संगीत में रागों के उत्कर्ष को दर्शाते हैं और संगीत की रचनात्मकता में नए मार्ग खोले।

पुरंदर दास का देहावसन 1564-1565 ई. के आस-पास विजयनगर (वर्तमान कर्नाटक) में माना जाता है। वे दक्षिण भारत में

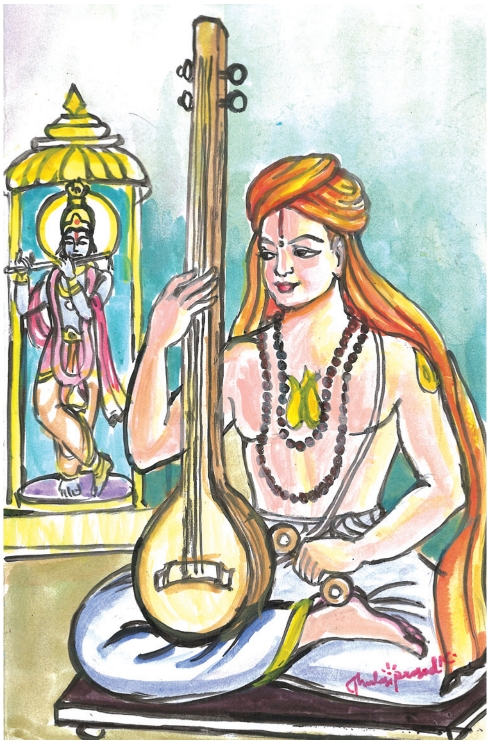

भक्ति आंदोलन, कर्नाटक संगीत और सामाजिक सुधार की प्रेरक आवाज़ के रूप में सदैव याद किए जाते हैं; कनकदास जैसे समकालीन संतों और बाद की कई पीढ़ियों ने उनकी साधना और संगीत से प्रेरणा ली। आज भी उनके जन्म दिवस को ''कर्नाटक संगीत दिवस'' के रूप में मनाया जाता है और उनके पद मंदिरों, मंचों तथा घरों में भक्ति और संगीत-साधना के महत्वपूर्ण आधार बने हुए हैं।

संक्षेप में, पुरंदर दास ने कर्नाटक संगीत की शिक्षा, संरचना और भक्ति संगीत के विकास में अग्रणी योगदान दिया, जिसके बाद के संगीताचार्यों जैसे त्यागराज, श्यामा शास्त्री और एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी के संगीत पर भी गहरा प्रभाव डाला। उनके पद और शिक्षण प्रणाली आज भी कर्नाटक संगीत के मूलभूत अंग हैं।

संकीर्तन का तेलुगु शीर्षक
''विन्नपालु विनवले - विंत विंतलु''

संकीर्तन का हिंदी अनुवाद

चित्र विचित्र विनतियाँ सुननी
क्यों नहीं उठाते स्वामी शेष रूपी
मच्छरदानी। ।।चित्र विचित्र।।
भोर सुबह बीता प्रहर - मुनि-ऋषिगण
यह देखो वहाँ खडे करे इंतजार
शीतल कमल पंकुडियाँ वाले नेत्र
धीरे धीरे खोल क्यों नहीं जागते
स्वामी! ।।चित्र विचित्र।।
गरुड़, किन्नेर, यक्ष -
सुंदर कामिनियों के पीछे चले
विरह के गीत आलापते -
चित्र विचित्र रागों में
तुम्हारे गीत आलापते -
वह देखो स्वामी!

सिरि सुंदर अपने मुख से गीत -
क्यों नहीं सुनते उस के स्वामी! ।।चित्र विचित्र।।
बलवान गर्वीले आदिशेष, तुंबुरु, नारदादि
पंकज भव ब्रह्मादि तुम्हारे चरणों के निकट पहुँचे
दर्शन के लिए खडे - अपनी अलमेलुमंगा
अपने पलके खोल कर देखने हे वेंकटेश जागो
स्वामी! ।।चित्र विचित्र।।

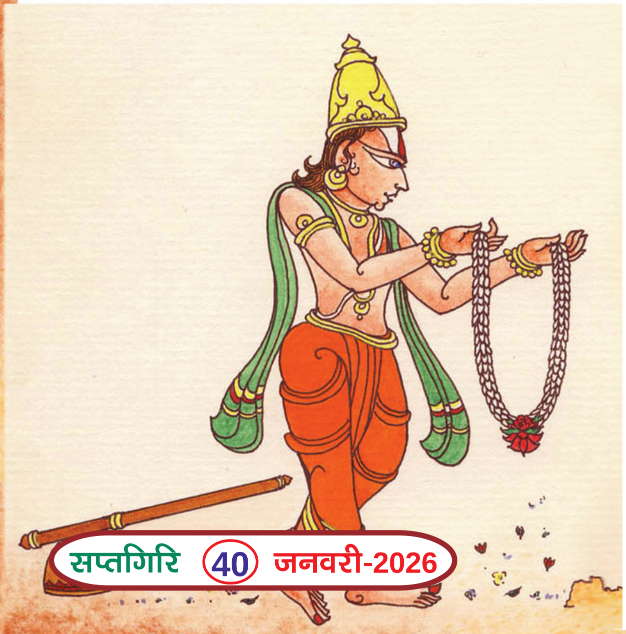

श्रीनिवास की संकीर्तन - पुष्पांजली

- प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

भावार्थ :

यह श्री वेंकटेश्वर स्वामी का सुप्रभात व जागृति संकीर्तन है। सारे लोकों के अधिदेव श्री वेंकटेश्वर अपने सुंदर रूप के साथ सोये हुए हैं। उन पर आश्रित सारे लोकों के लोग उन्हें अपनी अपनी चित्र विचित्र विनतियाँ सुनाने उन के सामने खडे हैं। अन्नमय्या ने इस संकीर्तन में 'पर' रूपी श्री महाविष्णु के रूप में श्री वेंकटेश्वर की कल्पना की है। जो सदा श्री वैकुंठ में शेष शयन करते हैं। श्री वेंकटेश्वर भी आनंदनिलय मंदिर में शेष रूपी मच्छरदानी लगाकर लेटे हुए हैं। स्वामी को जगाते और आश्रित जनों की विनतियाँ सुनने के लिए प्रार्थना करते हुए अन्नमय्या ने सुंदर संकीर्तन रचा है।

इस संकीर्तन के द्वारा अन्नमय्या स्वामी से विनति के साथ-साथ प्रश्न भी करते हैं कि सारे लोकों के प्राणी आप के दर्शन करने और अपनी अपनी विनतियाँ सुनाने आप के चरणों के पास पहुँचे हैं। ऐसे में आप नींद से क्यों नहीं जागते हैं? अपने सुकोमल कमल रूपी नेत्रों को खोल कर उन की विनतियाँ क्यों नहीं सुनते हैं? उन की विनतियाँ भी चित्र विचित्र प्रकार की होती हैं। फिर भी आप को सुननी हैं।

अन्नमय्या का विचार है कि भोर सुबह हो गयी है। प्रथम प्रहर भी बीत चुका है। देवतागण, मुनि-ऋषिगण सारे आप के चरणों के पास आकर आप के सुंदर नेत्रों के खोलने के इंतजार में खडे हैं। हे स्वामी! कमल के सुकोमल पंकुडियों वाले अपने नेत्रों को क्यों नहीं खोलते? अपने सुंदर नेत्रों को एक बार खोल कर देखो स्वामी!

गरुड़, किन्नेर, यक्ष आदि लोग कामिनियों के पीछे पड कर विरह के गीतों के साथ चित्र विचित्र गीत आलाप कर रहे हैं। तुम्हारे बारे में भी वे चित्र विचित्र गीत गा रहे हैं। वहाँ देखो स्वामी! लक्ष्मी माई भी अपने सुंदर मुँह से तुम को जगाने की कोशिश में लगी है। उन की बात क्यों नहीं सुनते स्वामी! अपनी शेष रूपी मच्छरदानी को हटाकर जागो स्वामी!

बलवान और सदा गर्व करनेवाले आदिशेष, तुंबुर, नारद और पंकज भव ब्रह्मादि भी आप के चरणों के पास पहुँच कर आप के जागने के इंतजार में खडे हैं। सदा आप के बहुत ही निकट रहनेवाली अलमेलुमंगा के साथ खडे हैं। अब तो अपने सुंदर नेत्र खोल कर उन्हें दर्शन दे स्वामी! और उन की चित्र विचित्र विनतियाँ सुनिए स्वामी! हे वेंकटेश्वर स्वामी अपनी सुंदर पलके खोल कर जागो स्वामी! जागो स्वामी! चित्र विचित्र तरह-तरह की विनतियाँ सुनने का समय हो गया है।

नवंबर-2025 महीने का क्विज-40 के समाधान

1) श्री पद्मावती देवी, 2) चक्रस्नान,

3) क्षीरसागर का मंथन में,

4) धरणी देवी, 5) गंगानदी,

6) भृगु, 7) कोल्हापुर,

8) कृष्णनंदि (या) विष्णुनंदि,

9) आंध्रप्रदेश में नंद्याल शहर के आस-पास,

10) तुलसीदास,

11) लगभग 95-96%,

12) कुकुर्बिटेसी-Cucurbitaceae,

13) गजवाहन, 14) कांचीपुरम्, 15) सूर्यनंदि.

नवंबर-2025 महीने का क्विज-40 के समाधान के विजेता

चि. आराध्या कुमारी

चंदा नंबर : IM1606240897

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

पत्रिका चंदा विवरण

◆ 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है।

◆ 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका में कई आध्यात्मिक अंश प्रकाशित हो रहे है।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका तेलुगु, तमिल, कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रहे है।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका के वार्षिक चंदा रु.240/-.

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका के जीवन (12 वर्ष ही मात्र) चंदा रु.2,400/-.

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा रु.1,030/-.

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका के चंदा भरने के लिए पाठक गण मांगड्राफ्ट(D.D.), ई.एम.ओ(EMO), भारतीय डाकघर(IPO) और ऑनलाइन (ttdevasthanams.ap.gov.in) के द्वारा दर्ज कर सकते हैं।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका चंदा केलिए पाठक किसी भी जातीय बैंक में 'चीफ एडिटर, सप्तगिरि मागजैन, टि.टि.डी., तिरुपति' के नाम पर डी.डी. लेकर, डाकघर के द्वारा संबंधित विवरण लिख कर, 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति' पते को भेजना चाहिए।

◆ चंदादार अपने घर का पता, पिनकोड, मोबाइल नंबर, वांछित भाषा विवरण स्पष्ट रूप से लिख कर भेजना चाहिए।

◆ 'सप्तगिरि' पत्रिका समय पर नहीं पहुँचे, तो घर के पते में कोई परिवर्तन हुई, तो यहाँ सूचित ई-मेइल (chiefeditortpt@gmail.com) से कृपया संपर्क करें।

◆ अतिरिक्त समाचार के लिए दूरभाष-0877-2264543 / 2264359 से संपर्क करें।

◆ अन्य विवरण केलिए ''प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड, तिरुपति - 517 507'' पते पर संपर्क करें।

◆ सीधे संपर्क करना चाहिए है, तो प्रधान संपादक कार्यालय के समयों में संपर्क करें।

पुदीना और इसके स्वास्थ्य लाभ

- डॉ.सुमा जोषि

पुदीना(Mint) एक सुगंधित औषधीय पौधा है, जो प्राचीन काल से मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा रहा है। इसका उल्लेख विभिन्न सभ्यताओं में औषध, सुगंध एवं भोजन के रूप में मिलता है। पुदीना भारतीय घरेलू चिकित्सा का अभिन्न अंग है - चाहे वह पुदीने की चटनी के रूप में हो, पुदीना अर्क (Peppermint Oil) के रूप में या फिर औषधि के रूप में।

पौराणिक दृष्टि से, पुदीना का संबंध शीलतला, ताजगी और मन की शांति से माना गया है। भारतीय परंपरा में इसे शीत प्रकृति का पौधा कहा गया है, जो शरीर और मन दोनों को शीतलता प्रदान करता है। लोकविश्वासों के अनुसार पुदीना का पौधा नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और वातावरण को शुद्ध बनाता है। कुछ स्थानों पर इसे पूजा-पाठ में पवित्र सुगंध के रूप में प्रयोग किया जाता है।

ग्रीक पौराणिक कथा के अनुसार, पुदीना का नाम ''मिंथा'' नामक एक अप्सरा से जुड़ा है। कहा जाता है कि मिंथा अंडर्वर्ल्ड के देवता हैडिस की प्रिय थी। जब हैडिस की पत्नी पर्सेफोन को यह बात पता चली, तो उसने क्रोध में मिंथा को रौंद दिया। हैडिस ने करुणा से उसे एक सुगंधित पौधे के रूप में पुनर्जीवित किया - जिसे आज हम Mint के नाम से जानते हैं। इसलिए इसे स्मृति और शीतलता का प्रतीक माना जाता है।

ऐतिहासिक दृष्टि से, पुदीना का उपयोग प्राचीन मिस्र, यूनान, रोम और भारत में हजारों वर्षों से किया जा रहा है। मिस्र की पिरामिडों में पुदीने के सूखे पत्तों के प्रमाण मिले हैं, जिससे पता चलता है कि इसे औषधीय और सुगंधित उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता था।

भारत में चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे आयुर्वेदिक ग्रंथों में पुदीना का सीधा उल्लेख नहीं मिलता, किंतु इसके समान गुणों वाले सुगंधी, शीतवीर्य एवं दीपनीय द्रव्य के रूप में इसका उपयोग वर्णित है। लोक चिकित्सा में यह पित्तशामक, अजीर्णनाशक, ताजगी प्रदान करने वाला और सिरदर्द में लाभदायक माना गया है।

मध्यकालीन भारत में पुदीना का प्रयोग यूनानी चिकित्सा पद्धति में भी व्यापक रूप से हुआ। वहाँ इसे ''फूदीना'' कहा गया और इसे पाचन सुधारने, श्वसन रोगों तथा मुख की दुर्गंध दूर करने के लिए अमूल्य औषधि माना गया।

पुदीना एशिया, यूरोप और अफ्रीका के समशीतोष्ण क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। भारत में यह उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाण, बिहार और हिमाचल प्रदेश में विशेष रूप से उगाया जाता है। यह शीतप्रिय पौधा है और इसे पर्याप्त नमी व धूप वाले क्षेत्रों में अच्छा विकास मिलता है। पुदीना का वैज्ञानिक नाम Mentha arvensis Linn. है। यह Lamiaceae (Labiatae) कुल से संबंधित है, जिसे सामान्यतः तुलसी कुल कहा जाता है। इस कुल के पौधों में विशिष्ट सुगंध और चौकोर तना (Square stem) पाया जाता है। पुदीना के

सामान्य नाम पुदीना, मिंट, पिपरमिंट (Peppermint) तथा स्पीयरमिंट (Spearmint) हैं। अंग्रेज़ी में इसे Mint कहा जाता है। पुदीना की ऊँचाई लगभग 30 से 60 सेंटीमीटर तक होती है। इसकी विशिष्ट सुगंध इसके वाष्पशील तेल (Essential Oil) के कारण होती है, जिसमें Menthol प्रमुख घटक होता है। इसकी जड़ें रेशेदार (Fibrous) होती हैं, जो भूमिगत रूप से फैलकर नए पौधों का निर्माण करती हैं। तना चौकोर आकार का, कोमल, हरा या बैंगनी आभा लिए होता है। पत्तियाँ सरल, विपरीत क्रम में लगी होती हैं, जिनका आकार अंडाकार या भालाकार होता है। पत्तियों पर सूक्ष्म रोम (hairs) पाए जाते हैं और छूने पर इनमें से सुगंधित वाष्प निकलती है। इसके फूल छोटे, बैंगनी या गुलाबी रंग के होते हैं, जो तने के ऊपरी भाग में होर्ल्स (Whorls) के रूप में समूहों में दिखाई देते हैं। फल सूक्ष्म, शुष्क और चार बीजों वाला Schizocarp प्रकार का होता है, जबकि बीज छोटे, गोलाकार और भूरे रंग के होते हैं।

प्रमुख प्रजातियाँ :

1. Mentha arvensia - जापानी पुदीना (Indian Field Mint)
2. Mentha Piperita - पिपरमिंट
3. Mentha spicata - स्पीयरमिंट
4. Mentha Viridis - ग्रीन मिंट
5. Mentha citrata - बर्गामोट मिंट

इनमें से Mentha arvensis भारत में औषधीय और औद्योगिक उपयोग के लिए सर्वाधिक उगाई जाती है।

पुदीने की रासायनिक संरचना

पुदीना(Mint) में मुख्य रूप से वाष्पशील तेल पाए जाते हैं, जिनमें मेंथॉल, मेंथोन, मेंथिल एसीटेट, लिमोनीन और सिनिओल प्रमुख घटक हैं। ये तत्व पुदीना को उसकी ठंडक, सुगंध और औषधीय गुण प्रदान करते हैं। इसके अलावा इसमें फ्लेवोनॉइड्स, टैनिन, फिनोलिक यौगिक (जैसे रोस्मारिनिक अम्ल) तथा विटामिन A, C, E और खनिज जैसे कैल्शियम्, आयरन व पोटैशियम भी पाए जाते हैं। ये सभी घटक पुदीना को एंटीऑक्सिडेंट, जीवाणुरोधी, सूजन-रोधी और पाचन सुधारक गुण देते हैं।

पुदीना के आयुर्वेदिक गुण

पुदीना की आयुर्वेदिक दृष्टि से प्रकृति शीतवीर्य, तीक्षण, सुगंधित, पित्तशामक और कफहर मानी जाती है। इसका रस कटु (तीखा) और तिक्त (कड़वा) होता है तथा विपाक कटु होता है। यह दीपन (भोजन की इच्छा बढ़ाने वाला), पाचन (अन्न पचाने वाला) रोचक, कृमिनाशक, श्वास-कासहर और मुखदुर्गंध नाशक होता है। पुदीना शरीर में शीतलता प्रदान करता है, मन को ताजगी देता है और पित्त तथा कफ दोष को संतुलित करता है।

पुदीना के उपयोग के तरीके

- पुदीना चटनी - ताजी पत्तियों को धनिया, नींबू और मसालों के साथ पीसकर भोजन के साथ सेवन करें।
- पुदीना चाय (Mint Tea) - कुछ पत्तियों को पानी में उबालकर सुबह-शाम पीएँ; सर्दी, खांसी, अपच में लाभदायक।
- पुदीना रस - 1–2 चम्मच ताजे रस में थोड़ा शहद मिलाकर सेवन करें; पित्त विकार और मितली में उपयोगी।
- पुदीना तेल - सिरदर्द, जोड़ों के दर्द या खुजली में बाह्य रूप से लगाएँ।

- भाप-पुदीने की पत्तियाँ या तेल गर्म पानी में डालकर उसकी भाप लें; नाक बंद और खांसी में राहत मिलती है।
- सलाद या पेय पदार्थों में - ताजी पत्तियाँ मिलाकर पाचन और ताजगी के लिए उपयोग करें।

पुदीना के 25 स्वास्थ्य लाभ

1. पाचन सुधारक - पुदीना भूख बढ़ाता है और अपच को दूर करता है।
2. गैस और कब्ज में लाभकारी - यह वातनुलोमक होकर पेट की गैस और कब्ज कम करता है।
3. उल्टी और मितली में उपयोगी - पुदीना रस उल्टी, जी मिचलाना और यात्रा के दौरान होने वाली उल्टी को रोकता है।
4. सर्दी-जुकाम में राहत - पुदीना के तेल की भाप लेने से नाक बंद और सर्दी में आराम मिलता है।
5. खांसी और गले के दर्द में उपयोगी - पुदीना गले को ठंडक और राहत प्रदान करता है।
6. सिरदर्द में लाभकारी - पुदीना तेल माथे पर लगाने से सिरदर्द कम होता है।
7. श्वसन रोगों में सहायक - यह श्वास नालिकाओं को खोलता है और अस्थमा तथा सर्दी में राहत देता है।
8. मुँह की दुर्गंध दूर करता है - पुदीना मुखशुद्धिकारक है और सांस को ताजगी देता है।
9. त्वचा की खुजली व जलन में राहत - पुदीना का रस या तेल त्वचा को ठंडक देता है।
10. मुँहासे और दानों में उपयोगी - इसके जीवाणुरोधी गुण त्वचा को साफ रखते हैं।
11. मानसिक ताजगी प्रदान करता है - इसकी सुगंध, मन को शीतलता और एकाग्रता देती है।
12. पित्त दोष को शांत करता है - पुदीना का सेवन पित्तजन्य विकारों को कम करता है।
13. कफ को दूर करता है - यह कफनाशक होकर श्वसन तंत्र को शुद्ध करता है।
14. शरीर की गर्मी कम करता है - इसका सेवन शरीर को ठंडक प्रदान करता है।
15. एंटीऑक्सिडेंट गुणों से भरपूर - शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में सहायक।
16. संक्रमण से बचाव - पुदीना में जीवाणुरोधी और विषाणुरोधी गुण होते हैं।
17. गले की खराश और टॉन्सिल में लाभकारी- पुदीना जल से गरारे करने से राहत मिलती है।
18. मासिक धर्म के दर्द में उपयोगी - पुदीना चाय ऐंठन और दर्द को कम करती है।
19. मुँह के छालों में राहत - पुदीना रस से कुल्ला करने से छालों में आराम मिलता है।
20. मूत्र संबंधी विकारों में सहायक - यह मूत्रवर्धक गुणों वाला होता है।

21. इम्यूनिटी बढ़ाता है - नियमित सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है।

22. थकान और तनाव दूर करता है - पुदीना तेल से मालिश करने से मानसिक तनाव कम होता है।

23. हृदय को ताजगी देता है - इसकी शीतल प्रकृति हृदय को शांति और संतुलन प्रदान करती है।

24. मुँह सूखने पर राहत - पुदीना का सेवन लार स्राव को बढ़ाता है।

25. एलर्जी और सूजन में लाभकारी - इसके एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण सूजन को कम करते हैं।

पुदीने से क्षारीय जल (Alkaline Water) बनाने की विधि :

पुदीना से क्षारीय जल तैयार करना बहुत सरल और स्वास्थ्यवर्धक तरीका है। इसके लिए लगभग 1 लीटर स्वच्छ पानी में 10-12 ताज़ी पुदीने की पत्तियाँ डालें। इच्छानुसार स्वाद और क्षारीयता बढ़ाने के लिए इसमें कुछ नींबू और खीरे के स्लाइस भी मिलाए जा सकते हैं। इस मिश्रण को ढककर 6 से 8 घंटे या पूरी रात के लिए कमरे के तापमान पर रख दें। सुबह इस पानी को छानकर दिनभर धीरे-धीरे पिया जा सकता है। यह पुदीना जल शरीर के PH संतुलन को बनाए रखता है, अम्लता (Acidity) को कम करता है, पाचन को सुधारता है, शरीर को ठंडक प्रदान करता है और विषाक्त तत्वों (Toxins) को बाहर निकालने में सहायक होता है।

पुदीने के अधिक उपयोग के दुष्प्रभाव और सावधानियाँ

पुदीना का अत्यधिक सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसमें मौजूद मेंथॉल अधिक मात्रा में लेने पर पेट में जलन, गेस, उलटी या दस्त जैसी पाचन समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। यह ब्लड प्रेशर को कम कर सकता है और गर्भवती महिलाओं में गर्भाशय को उत्तेजित कर जटिलता पैदा कर सकता है। कुछ लोगों को पुदीना से एलर्जी, सिरदर्द या चक्कर भी हो सकते हैं। जिन लोगों को एसिडिटी या GERD की समस्या है, उन्हें इसका सेवन सीमित रखना चाहिए। सावधानी के तौर पर पुदीना का उपयोग हमेशा सीमित मात्रा में करें, खाली पेट या लगातार लंबे समय तक सेवन न करें। बच्चों, गर्भवती महिलाओं और रोगियों को इसका उपयोग चिकित्सक की सलाह से ही करना चाहिए। पुदीना तेल का सीधा सेवन या त्वचा पर लगाना उचित नहीं है; इसे हमेशा पानी या अन्य तेल में मिलाकर ही प्रयोग करें।

सुझाव

पुदीना का उपयोग सीमित मात्रा में करें। सामान्यतः प्रतिदिन थोड़ी मात्रा में ताजा पत्तियाँ या पुदीना चाय सुरक्षित मानी जाती है, लेकिन तेल या सप्लीमेंट का उपयोग चिकित्सक की सलाह से ही करें।

फरवरी 2026

01. श्री रामकृष्ण तीर्थ मुक्कोटी

08 से 16 तक श्रीनिवासमंगापुरम्

श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

08 से 17 तक तिरुपति

श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

15. महाशिवरात्रि

24 से मार्च 04 तक तरिगोंडा

श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

26 से मार्च 02 तक तिरुमल

श्री बालाजी का प्लवोत्सव

जनवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा, आपके वाणी-व्यवहार की कुशलता कार्य सिद्धि में सहायक, समयानुकूल होने के कारण कार्यों में लाभ के अवसरों का फायदा उठना चाहिये। संतान पक्ष की चिन्ता बनी रहेगी, मास के उत्तरार्ध में सकारात्मक परिवर्तन दिखेगा।

वृषभ राशि - इस मास में कुछ मानसिक वेदना होने के कारण चित्त अशान्त रहेगा, अनावश्यक भागदौड़ धूप, स्वास्थ्य बाधा, चोट-दुर्घटना, उच्चाधिकारियों से वैमनसता, निरर्थक भागदौड़, कार्य-व्यापार में श्रम पूर्ण सफलता। मास के उत्तरार्थ में ग्रहों के परिवर्तन होने से सकारात्मक बदलाव, रुके हुए कार्यों में प्रगति, नौकरी पेशों में उल्लास।

मिथुन राशि - यह मास आपके लिए मध्यमफलदायक रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य चिन्ता, हृदय रोग, उच्चरक्तचाप से ग्रसित लोगों को विशेष सावधानी जरूरी। आर्थिक संतुलन, कौटुम्बिक दायित्व निर्वहन से दूरी बनी रहेगी। उत्तरार्ध में प्रतिकूल में कठिनाई, छात्रों के लिए प्रतियोग क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन ही प्रभावी दिखेगा।

कर्कटक राशि - मौसम परिवर्तन होने से रक्तदोष, जननेन्द्रियों में पीड़ा, वृथा चिन्ता से तनाव, वाद-विवाद से परेशानी, आर्थिक स्थिति के कारण मानसिक चिन्ता। जिससे चित्त भ्रमित रहेगा। कौटुम्बिक चिन्ता, व्यापार सामान्य, आर्थिक संतुलन हेतु विशेष प्रवास करना पड़ेगा।

सिंह राशि - यह माह आपके लिए उत्तम रहेगा। मानसिक स्थिति सन्तुलित रहेगा, आपके वाक्पटुता से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा। निरर्थक तनाव-विवाद से दूरी बनाकर रखने से सफलता, उत्तरार्ध में मिला-जुला प्रभाव दिखेगा। आर्थिक विकास, उद्योग-व्यापार में सफलता मिलेगा।

कन्या राशि - प्रशासनिक कार्यों में प्रवृत्ति, रोग-ऋण से मुक्ति, शत्रुओं से सावधान रहे, नौकरी में शुभद परिवर्तन, आरोग्य सुख, सम-सामयिक विकास, राजकार्यों में अनुकूलता, शैक्षणिक विकास, उद्योग-व्यापार में सफलता, उत्तरार्ध में प्रगति शीलता बनी रहेगी। एकाधिक स्रोतों से आय, गृह भूमि, संवाद से हर्ष, यत्र तत्र यात्रा योग बन रहा है।

तुला राशि - यह माह आपके लिए उत्तमफलदायक सिद्ध होगा, मासपर्यन्त धन का आवागमन बना रहेगा। कार्यक्षेत्र की विघ्न-बाधाओं का निवारण, आरोग्य सुख, नौकरी-व्यावसाय की स्थिति अनुकूल, विद्या में प्रगति, गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। उत्तरार्ध में मानसिक उलझनें, श्रम पूर्ण प्रगति।

वृश्चिक राशि - यह माह आपके लिए सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण रहेगा, निरन्तर कार्यक्षेत्रों में प्रगतिशीलता बढ़ेगी। नौकरी-व्यवसायादि में सफलता, पद-प्रतिष्ठा की वृद्धि, इष्ट-मित्रों का सहयोग, पारिवारिक सुख-सुविधाओं आनन्द से भरपूर रहेगा। आर्थिक समुन्नति, निर्माण कार्यों में प्रगति, यात्रा सुखद।

धनुष राशि - यह माह आपके लिए मध्यम रहेगा, प्रशासनिक विचार धारा में समय व्यतीत होगा, शारीरिक सुख, रोग, ऋण-शत्रु बाधा से मुक्ति, नौकरी में सुखद बदलाव, सम-सामयिक कार्यों में सफलता, राजकीय पक्ष का सहयोग, छात्रों के लिए प्रतियोगी क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा अधिक, आर्थिकलाभ।

मकर राशि - मासफल मध्यम रहेगा। अनावश्यक उलझनों से परेशानी, निरर्थक व्यय, मानसिक-शारीरिक व्यथा, ऋण ग्रस्तता, सामायिक कार्यों में गतिरोध, छात्रों के लिए समय अनुकूल रहेगा। उत्तरार्ध में थोड़ी राहत अवश्य मिलेगी। उद्योग-व्यापार में सीमित सफलता।

कुंभ राशि - शारीरिक सुख, अन्न-धन-वस्त्रादि की प्राप्ति, अभीष्ट सिद्धि प्राप्ति। स्थिर आमदनी का मार्ग प्रशस्त, सन्तान सुख, कार्य-व्यापारादि क्षेत्रों में लाभ, मानसिक सन्तुलन के कारण व्यक्तित्व का विकास होगा। उत्तरार्ध में सूर्य-मंगल का परिवर्तन कठिनाईयाँ उत्पन्न करेगा।

मीन राशि - यह माह आपके लिए मध्यमफलदायक रहेगा। मानसिक-शारीरिक व्यथा, कटुतिक्त अनुभव, राजकीय उलझनों से बचना चाहिये, इष्टमित्रों के सहयोग से कार्यों में प्रगति, प्रतियोगी क्षेत्र में सफलता, पारिवारिक दायित्व निर्वहन में कठिनाई। उत्तरार्ध में सूर्य का बदलाव सकारात्मक परिवर्तन देगा। रोजी-रोजगार में सफलता, ज्ञान वृद्धि लाभ।

चित्रकथा

अंतिम उपदेश

तमिल मूल - श्रीमती श्रीनिधि
अनुवादक - श्री के.रामनाथन
चित्रकार - श्री कमलकन्नन

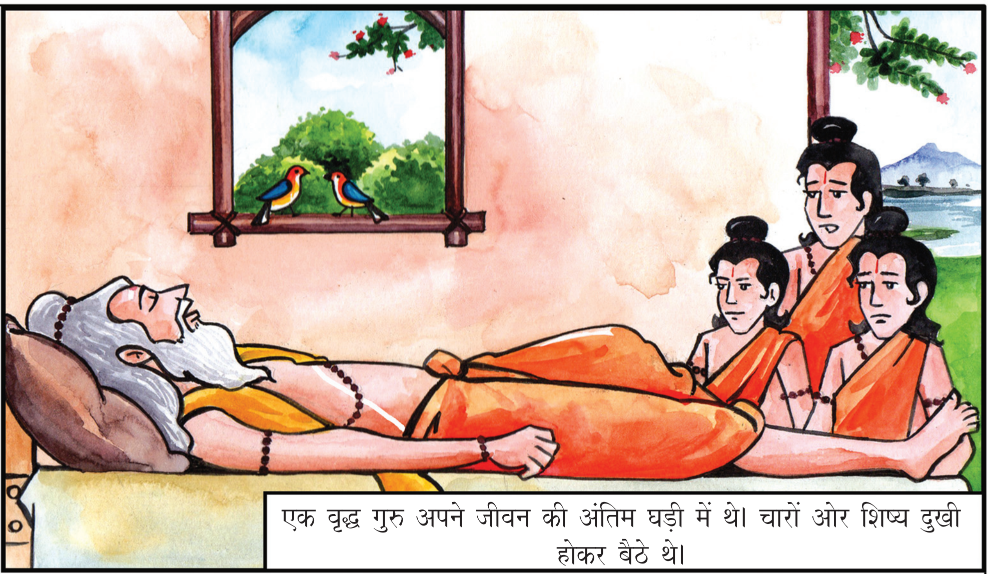

फिर जब शिष्य ने ध्यान से सोचा, तो उसे बात समझ में आ गई। गुरु का संकेत है कि जीवन के आखिरी पल को भी बिना मौत के डर के स्वाद लेना सीखो।

(नीतिकथा)

बुद्धिमान सेवक

- श्रीमती प्रेमा रामनाथन

रमेश उस, गाँव में कपड़े का व्यापार करते थे। उनके कपड़ों की दुकान में ज्यादातर लोग खरीदारी करते थे। क्योंकि वहाँ कपड़ों की गुणवत्ता अच्छी और दाम कम थे। कन्हैया ज्यादा पढ़ा-लिखा नहीं था, लेकिन बहुत बुद्धिमान था। वह राजेश के यहाँ काम करता था। कन्हैया के कई अच्छे सुझावों से राजेश का व्यापार बहुत चमकता था। इस वजह से राजेश को कन्हैया पर बहुत भरोसा हो गया। वे हमेशा उसे अपने पास रखते थे। जब भी कोई संदेह या समस्या आती, वे कन्हैया की सलाह लेते और उसी के अनुसार काम करते थे। कन्हैया भी उसके भरोसे पर खरा उतरता था। इसलिये राजेश उसे नौकर नहीं बल्कि अपने परिवार का सदस्य मानते थे।

एक दिन राजेश ने कन्हैया को बुलाया और कहा, ‘‘आज शाम मेरा दोस्त कुणाल घर आ रहे हैं। उनका घर शहर में हैं और वे कई सालों बाद मुझसे मिलने यहाँ आ रहे हैं। इसलिये उनके स्वागत के लिये उचित तैयारी करो।’’

कन्हैया ने उसी के अनुसार सभी इंतजाम कर दिये। उस शाम कुणाल अपनी बड़ी गाड़ी में अपने दोस्त के घर पहुँचे। अपने दोस्त को देखकर राजेश ने बहुत खुशी से उनका स्वागत किया। गाँव के रिवाज के अनुसार राजेश ने अपने नौकर कन्हैया से हाथ-पैर धोने के लिये पानी लाने को कहा। फिर वे दोनों दोस्त घर के अंदर आये और बैठ गये।

राजेश ने अपने दोस्त को कन्हैया से मिलवाया। जब वे कन्हैया के बारे में बता रहे थे, तो उन्होंने कहा, ‘‘मेरा व्यापार इसी की वजह से बहुत अच्छा चल रहा है। इसकी सलाह हमेशा मेरे लिये मददगार होती है। इसलिये मैंने इसे अपने घर के सदस्य की तरह रखा है।’’ यह सुनकर कुणाल को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि एक नौकर को इतना सम्मान?

राजेश ने कुणाल से पूछा, ‘‘ठीक है, तुम्हारे गाँव में तुम्हारे परिवार में सब ठीक हैं? तुम्हारा व्यापार कैसा चल रहा है?’’ कुणाल ने जवाब दिया, ‘‘परिवार में सब ठीक हैं। लेकिन व्यापार दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। मुनाफे से ज्यादा नुकसान हो रहा है।’’

यह सुनकर राजेश ने पूछा, ‘‘तुम ऐसा क्यों कह रहे हो क्या वजह है?’’ कुणाल ने जवाब दिया, ‘‘मैं गुड़ बनाकर बेचता हूँ। उसके लिये जरूरी गन्ना पास के गाँव में सस्ता मिलता है। इसलिये मैं वहाँ जाकर खरीदता हूँ और गुड़ बनाकर बेचता हूँ। लेकिन दूसरे गाँव से गन्ना खरीदकर अपने गाँव लाने के लिये दो रास्ते हैं। एक रास्ता जंगल से होकर जाता है। वह रास्ता बहुत लंबा है और उस रास्ते से आने पर जानवरों का खतरा ज्यादा रहता है। इसलिये मैं उस रास्ते से नहीं आ पाता। दूसरे रास्ते में बीच में एक नदी पड़ती है। गाड़ी में लदे गन्ने को नदी के किनारे नाव में चढ़ाकर पार कराना पड़ता है। फिर दूसरी गाड़ी में रखकर लाना पड़ता है। इसमें दिक्कत यह है कि अगर नदी में अचानक बाढ़ आ जाये तो गन्ना बह जाता है। इससे बहुत नुकसान होता है। इतनी सारी समस्याओं के कारण व्यापार में मुनाफा कम हो रहा है और नुकसान ज्यादा।’’

तब राजेश ने कहा, ‘‘तो फिर इसका कोई समाधान सोचना चाहिए।’’

यह सुनकर नौकर कन्हैया ने कहा, ‘‘मालिक, अगर आप नदी पर एक पुल बनवा दें तो अपकी समस्या हल हो जायेगी।’’ यह सुनकर कुणाल ने कहा, ‘‘मैं पहले ही नुकसान में हूँ। तुम मुझे अपने खर्च पर गाँव के लोगों के लिये पुल बनाने के लिये कह रहे हो तुम बहुत बुद्धिमान हो।’’ यह सुनकर कन्हैया ने कहा, ‘‘मालिक ऐसा मत कहिये। पुल बनाने के लिये दो साल में होने वाले मुनाफे का उपयोग कीजिये।

उसके बाद आपका काम भी आसान हो जायेगा और मुनाफा भी ज्यादा मिलेगा। आप कई सालों तक लगातार मुनाफा कमा सकते हैं। इसके साथ ही अपने गाँव के लोगों के लिये पुल बनवाया है तो वे भी आपकी तारीफ करेंगे और इस काम में वे आपकी मदद भी करेंगे। जब तक यह पुल रहेगा आपकी कीर्ति बनी रहेगी।''

यह सुनकर कुणाल ने कहा, ''तुम ठीक कहते हो। दो साल के मुनाफे से पुल बनवा दिया जाये तो मेरा व्यापार हमेशा बिना रुकावट के चलेगा।''

फिर उन्होंने राजेश से कहा, ''तुम बहुत किस्मत वाले हो। कन्हैया जैसा बुद्धिमान नौकर तुम्हारे पास होना तुम्हारा सौभाग्य है।'' उसके बाद कुणाल अपने गाँव लौटे। कन्हैया की सलाह के अनुसार पुल बनाया गया। इससे कुणाल के लिये गन्ना लाना बहुत आसान हो गया। वे ज्यादा गन्ना ला पाये और अपने व्यापार में खूब मुनाफा कमाये। पुल बनने से गाँव वाले भी बहुत खुश थे।

तीन साल बाद कुणाल फिर से अपने दोस्त रमेश से मिलने आये। आते ही उन्होंने कन्हैया की बहुत तारीफ की। उन्होंने गर्व से बताया कि कन्हैया की वजह से उसे अपने व्यापार में बहुत मुनाफा हुआ है। यह सुनकर राजेश बहुत खुश हुए।

उस दिन दोनों दोस्तों ने खाना खाने के बाद आराम किया। राजेश के सो जाने पर कुणाल बिस्तर से उठे और कन्हैया के कमरे में गये। उन्होंने कन्हैया से पूछा, ''इस समय क्या कर रहे हो कन्हैया ने जवाब दिया, मैं मालिक के दुकान के हिसाब-किताब सही है या नहीं यह देख रहा हूँ।'' तब कुणाल ने कहा, ''तुम इतनी मेहनत करते हो। तुम्हारी मेहनत से तुम्हारे मालिक बहुत मुनाफा कमा रहे हैं। तुम अपने विवेक के हिसाब से यहाँ रहने योग्य नहीं हो। मैंने उनसे तुम्हारे बारे में बहुत अच्छी बातें कीं। पर उन्होंने कहा कि कन्हैया के बारे में इतनी तारीफ मत करो। वह सिर्फ एक नौकर है। अगर उसकी तारीफ की जाये तो वह घमंड़ी हो जायेगा। और तो और, वह ऐसा इसलिये है क्योंकि मैं उसे इतनी छूट देता हूँ। नौकर को हमेशा नौकर ही रखना चाहिए। अगर उनकी ज्यादा तारीफ की जाये तो वे मालिक का सम्मान नहीं करते और घमंड़ से पेश आते हैं।'' कुणाल ने आगे कहा, ''तुम चिंता मत करो। विश्वासघाती इंसान के पास अब काम मत करो। तुम मेरे साथ मेरे घर आ जाओ। मैं तुम्हें अपने घर के सदस्य की तरह रखूँगा। मैं तुम्हें उससे पाँच गुना ज्यादा वेतन दूँगा।'' यह सुनकर कन्हैया ने कहा, ''मालिक मुझे थोड़ा समय दीजिये। मैं सोचकर जवाब दूँगा।'' यह सुनकर कुणाल ने कहा, ''यह सब मैं तुम्हारी भलाई के लिये कह रहा हूँ। तुम अपना अच्छा फैसला कल सुबह मेरे निकलने से पहले बताना। और ऐसा बताना कि तुम्हारे मालिक को समझ न आये पर मुझे समझ आ जाए।'' इसके बाद कुणाल राजेश के पास जाकर सो गये।

अगले दिन कुणाल जाने के लिये तैयार थे। तभी कन्हैया रसोई से एक प्याले में कुछ बहुत गरम लेकर आया। यह देखकर राजेश ने पूछा, ''कन्हैया क्या है यह इतना गरम जो हाथ में लेकर आये हो?''

कन्हैया ने कहा, ''मालिक, यह आपके दोस्त के पीने के लिये काढ़ा है। कल रात आपके साथ सोने के थोड़ी देर बाद ही वे पागल हो गये। वे मेरे पास आकर कुछ भी बड़बड़ाने लगे। पागल की तरह लड़खड़ाते हुये बात कर रहे थे। यह काढ़ा पीने से मन में कोई बुरा विचार नहीं रहेगा और रात को अच्छी नींद आयेगी।''

राजेश ने कन्हैया से पहले ही सुन लिया था कि उसके सो जाने के बाद कुणाल ने क्या किया था। दोस्त होने की वजह से वे कुछ न जानने का नाटक करते हुये बैठे रहे। लेकिन कुणाल को ऐसा लगा जैसे नौकर कन्हैया ने उसके गाल पर जोर से थप्पड़ मारा हो। इसके बाद उन्होंने नौकर का दिया हुआ काढ़ा पिया और चले गये।

राजेश ने कन्हैया की बहुत तारीफ की जिसने यह साफ दिखा दिया कि एक ईमानदार और सच्चा सेवक कभी भी लालच के आगे नहीं झुकता।

चित्रकथा

प्रकृति का सम्मान करें

तमिल मूल - श्रीमती श्रीनिधि
अनुवादक - श्री के.रामनाथन
चित्रकार - श्री कमलकन्नन

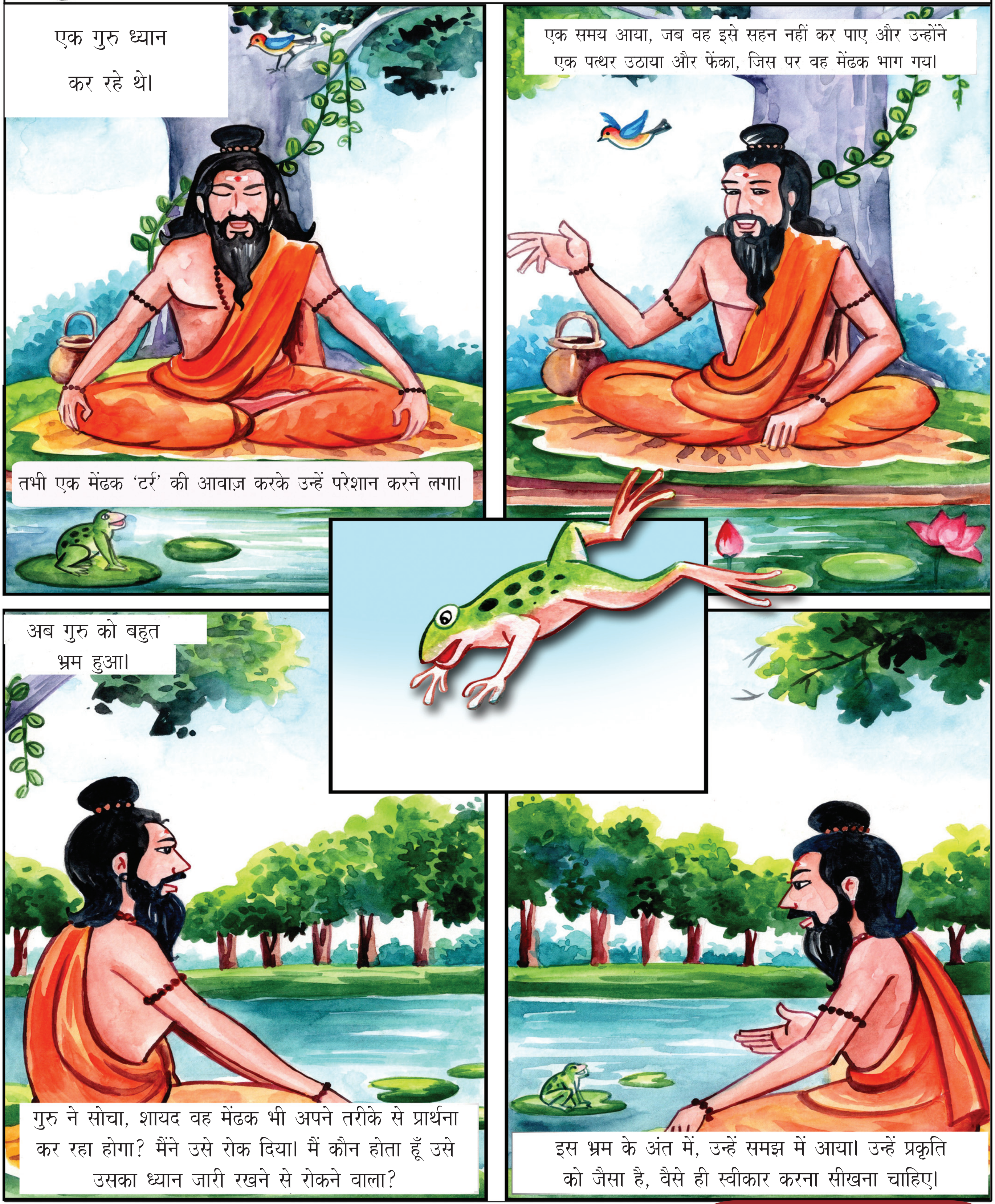

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..
लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................
पता..
....
मोबाइल नं..

क्विज-42

1) जनवरी महीने में सूर्यदेव किस राशि में प्रवेश करते है?
ज)..
2) माघ मास में किस पुण्य कार्य करने का उपयुक्त है?
ज)..
3) कोल्हापुर लक्ष्मीदेवी को श्रीनिवास विवाह के लिए किसने बुलाया?
ज)..
4) कर्नाटक संगीत के पितामह का नाम क्या है?
ज)..
5) रथसप्तमी पर्व को किस दिन संपन्न करते हैं?
ज)..
6) वसंतपंचमी के दिन किस देवी माँ का पूजा करते हैं?
ज)..
7) माघ मास शुक्ल पंचमी के दिन कौनसा पर्व मनाते है?
ज)..
8) तिरुवण्डूर क्षेत्र का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
9) तिरुअनन्तपुरम मंदिर का माताजी का नाम क्या है?
ज)..
10) पुदीना का वैज्ञानिक नाम क्या है?
ज)..
11) तिरुअनन्तपुरम मंदिर का विमान गोपुर का नाम क्या है?
ज)..
12) भगवान कृष्ण के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..
13) पुरंदरदास का जन्म लग भग किस वर्ष में हुआ?
ज)..
14) श्री वेंकटेश्वर के लिए कीर्तन गाने वाले प्रिय भक्त का नाम क्या है?
ज)..
15) नंदक खड्ग के द्वारा किसने जन्म लिया?
ज)..

रंगों को भरिये क्या!

तालिका में सूचित विषय के अनुसार समाधान को पहचान करें।

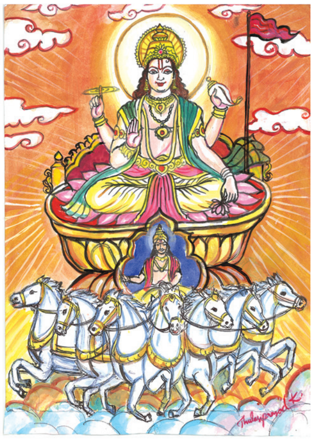

1) भगवान सूर्य के संबंधित सात अश्वों का नाम...

उ)1) गायत्री
2) बृहती
3) उष्णि
4) जगती
5) त्रिष्टुप
6) अनुष्टुप
7) पंक्ति

2) किसने अक्षय पात्र को किसको दिया?

उ) भगवान सूर्य ने युधिष्ठिर को दिया।

3) इस चित्र में भगवान सूर्य को पकडने के लिए कौन कोशिश कर रहे हैं?

उ) बालांजनेय

4) रथसप्तमी के अवसर पर विशेष रूप से पकवाने वाले व्यंजन का नाम क्या है?

उ) पोंगल

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....
2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत
3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-
4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :
5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करों।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

प्रधान संपादक : 2264363

कॉल सेंटर नंबर : 2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri R.V.Vijayakumar, B.A.,B.Ed., and Published by Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D. on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

दि.20-11-2025 को तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी को भारत के राष्ट्रपति माननीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने दर्शन की गयी। इस संदर्भ में आशीर्वाद मंडप में देवी माँ का प्रसाद, चित्रपठ और शेषवस्त्रों को माननीय राष्ट्रपतिजी को सौंपा दिया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. ई.ओ., आं.प्र. राज्य के धर्मस्व शाखा मंत्री, ति.ति.दे. बोर्ड के सदस्यगण आदि ने भाग लिया।

दि.21-11-2025 को तिरुमल, श्री बालाजी को भारत के राष्ट्रपति माननीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने दर्शन की गयी। इस संदर्भ में वेदाशीर्वचन के अनंतर चित्रपठ, तीर्थप्रसाद और 2026 वर्ष के कैलेंडर, डैयरी को माननीय राष्ट्रपतिजी को सौंपा दिया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. बोर्ड के अध्यक्ष, ति.ति.दे. ई.ओ., अतिरिक्त ई.ओ. और आं.प्र. राज्य के धर्मस्व शाखा मंत्री आदि ने भाग लिया।

दि.17-11-2025 को आं.प्र. राज्य सरकार की ओर से आं.प्र. के धर्मस्व शाखा मंत्री ने तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी का ब्रह्मोत्सव के अवसर पर रेशमी वस्त्रों को समर्पित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. जे.ई.ओ. ने भाग लिया।

दि.25-11-2025 को पंचमीतीर्थ के अवसर पर तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवी को तिरुमल बालाजी के मंदिर से भेंट को समर्पित किया। इस कार्यक्रम में श्रीश्रीश्री बडा जीयर स्वामीजी, श्रीश्रीश्री छोटा जीयर स्वामीजी, ति.ति.दे. बोर्ड के अध्यक्ष, ति.ति.दे. ई.ओ., अतिरिक्त ई.ओ. और ति.ति.दे. बोर्ड के अन्य सदस्यगण ने भाग लिया।

दि.01-12-2025 को श्रीरंगम्, श्रीरंगनाय स्वामीजी को कैशिक एकादशी के संदर्भ में ति.ति.दे. की ओर से रेशमी वस्त्र समर्पित करते हुए ति.ति.दे. बोर्ड के अध्यक्षजी।

दि.02-12-2025 को तिरुमल, सेवा सदन-2 में श्रीवारि सेवकों को 'ट्रैन द ट्रैनीस' नामक प्रशिक्षण कार्यक्रम को ति.ति.दे. ने आयोजित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. का अतिरिक्त ई.ओ., सी.पी.आर.ओ. और पी.आर.ओ. आदि ने भाग लिया।

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-12-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under
RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 1st of every month.

तिरुमल में पारुवेट उत्सव

16-01-2026